लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

आज़ादी का अमृत महोत्सव

वन्दे मातरम्

तेईसवाँ अंक

2021-22

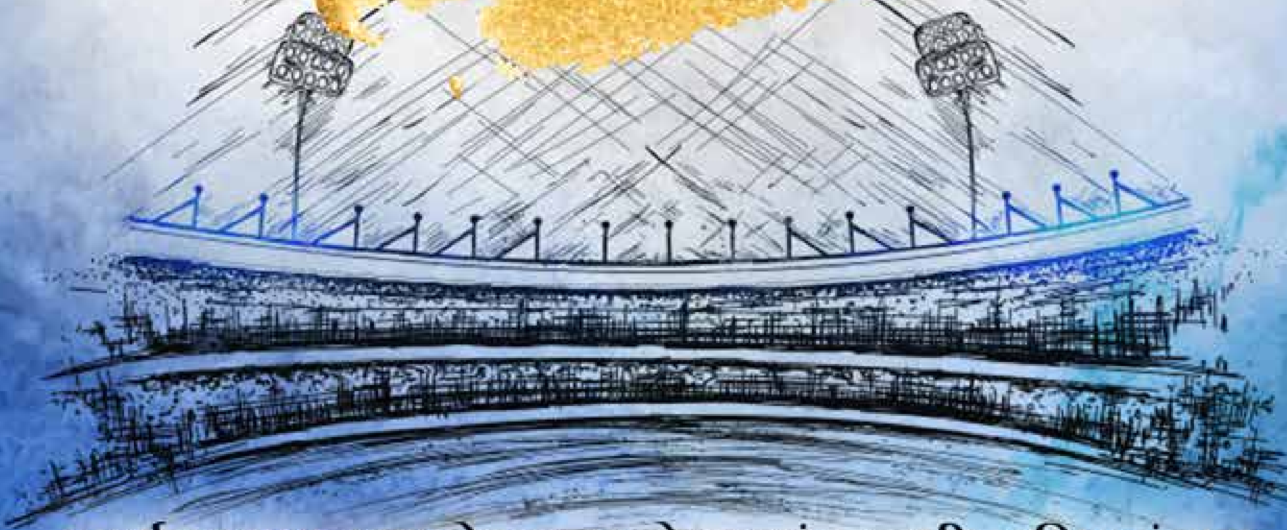

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल

ट्रेज़री बिल्डिंग्स, कोलकाता – 700 001

वंदे मातरम "२२वाँ " अंक
विमोचन समारोह ।

सत्यमेव जयते

हिन्दी पत्रिका

वन्दे मातरम्

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अर्धवार्षिक पत्रिका

तेईसवाँ अंक

2021-22

कार्यालय, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता – 700 001

पत्रिका परिवार

संरक्षक	**श्री दीपक नारायण** प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल
परामर्शदातृ समिति	**श्री राहुल कुमार**, उपमहालेखाकार (प्रशासन) **श्री शीश राम**, उपमहालेखाकार (पेंशन)
प्रधान संपादक	**श्री रेबती रंजन पोद्दार**, वरिष्ठ लेखा अधिकारी
संपादक	**श्री चन्दन कुमार बढ़ई**, हिन्दी अधिकारी
उपसंपादक	**श्री सन्नी कुमार**, कनिष्ठ अनुवादक
सहायक	**श्री जितेंद्र शर्मा**, सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ) **सुश्री स्मृति**, वरिष्ठ अनुवादक **श्री कुन्दन कुमार रविदास**, कनिष्ठ अनुवादक **श्रीमती प्रियंका संजीव सिंह**, कनिष्ठ अनुवादक
टंकण कार्य	**श्री अतुल कुमार**, लेखाकार

रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना जरुरी नहीं है क्योंकि वे उनके निजी विचार होते हैं।

यशोधरा रॉय चौधुरी
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक), पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता – 700001

संदेश

कार्यालयीन पत्रिका "वन्दे मातरम्" का तेईसवाँ अंक आप सभी के समक्ष भेंट स्वरूप प्रस्तुत करने में मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका का प्रत्येक अंक हिंदी के प्रचार-प्रसार में एक रचनात्मक भूमिका निभाता है। किसी भी देश की संस्कृति उसकी भाषा से अभिव्यक्त होती है और भारतीय संस्कृति की जड़ें निर्विवाद रूप से राजभाषा हिंदी से ही जुड़ी हैं।

यह देखकर सुखद अनुभूति होती है कि हर अंक के साथ कार्यालय के अधिकाधिक कर्मचारी मौलिक लेखन द्वारा राजभाषा हिन्दी से जुड़ रहे हैं और यही कार्यालयीन पत्रिका की सफलता है। आशा है कि राजभाषा हिंदी को कार्यालयीन संबंधी कार्यों में भी उपयोग कर इसे हिन्दी के विकास-पथ की ओर तीव्र गति से संप्रेषित करने में सफल होंगे।

आपकी सराहना हमें उत्साह देती है और आपके सुझाव हमें बेहतर बनाते हैं। अतः आप सभी सुधी पाठकों की प्रतिक्रिया अपेक्षित है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन पर पत्रिका परिवार को बधाई एवं पत्रिका के स्वर्णिम भविष्य हेतु मेरी शुभकामनाएँ

यशोधरा रॉय चौधुरी

तन्मय जाना
उपमहालेखाकार (प्रशासन)

संदेश

हमारी कार्यालयीन हिन्दी पत्रिका ‘‘वन्दे मातरम्’’ के तेइसवें अंक के सफल प्रकाशन पर अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह हर्ष का विषय है कि हमारी हिन्दी पत्रिका उत्तरोत्तर अधिक गुणवत्तापूर्ण एवं उन्नत हो रही है। ‘‘ग’’ क्षेत्र का कार्यालय होने के बावजूद भी इस अंक की रचनाओं में स्तरीय शब्दों का प्रयोग एवं सटीक अलंकारों का समावेशन सराहनीय उपलब्धि है। पत्रिका के हर अंक को निरंतर आप सभी का स्नेह एवं मार्गदर्शन मिला है, जिसके कारण हम इस पत्रिका को प्रकाशित कर पाने में सफल हुए हैं।

सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को साधुवाद। पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु शुभकामनाएँ।

तन्मय जाना

चन्दन कुमार बढ़ई
(संपादक) हिन्दी अधिकारी

संपादकीय

भाषा केवल सम्प्रेषण का माध्यम मात्र नहीं है, वरन यह राष्ट्रीय चेतना, व्यक्ति की संस्कृति तथा गरिमा की भी परिचायक होती है। अपनी भाषा में अभिव्यक्ति तथा विदेशी भाषा पर निर्भर नहीं रहना राष्ट्रीयता की पहचान है । हिन्दी की समरसता तथा जनप्रियता के कारण ही यह भाषा प्रत्येक भारतीय के लिए राष्ट्रभाषा का पर्याय बन रही है। हिन्दी हमारी राजभाषा है। राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार केंद्र सरकार के सभी कार्यालय राजभाषा हिन्दी को आत्मसात करते हुए कार्यालयी दायित्वों का निर्वहन करते है। यह प्रसन्नता का विषय है की हमारा कार्यालय 'ग' क्षेत्र में अवस्थित होते हुए भी हिन्दी में कार्यालयीन कार्य करने में सहज एवं सक्षम है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने हिन्दी के सफल कार्यान्वयन हेतु बारह 'प्र' की रूपरेखा तैयार किया है जो इस प्रकार है-

1)	प्रेरणा	2)	प्रोत्साहन	3)	प्रेम
4)	प्राइज़ (पुरस्कार)	5)	प्रशिक्षण	6)	प्रचार
7)	प्रसार	8)	प्रबंधन	9)	प्रमोशन(पदोन्नति)
10)	प्रतिबद्धता	11)	प्रयास	12)	प्रयोग

उपर्युक्त बारह 'प्र' सूत्रों से ही हिन्दी की विकासयात्रा की निरंतरता बनी रहेगी।

मुझे विश्वास है कि 'वंदे मातरम' का यह अंक आपको रुचिपूर्ण लगेगा। पत्रिका को और भी बेहतर बनाने के लिए आपके सुझावों का स्वागत है।

चन्दन कुमार बढ़ई
हिंदी अधिकारी

आपके पत्र

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का कार्यालय,
त्रिपुरा, अगरतला
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)
TRIPURA, AGARTALA
पिन PIN - 799006
फोन / Phone : 235-5494/235-0063
फैक्स/ Fax : 0381-2350158/ 235-0423
ईमेल/ Email: agautripura@cag.gov.in

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (प्रशासन/हिंदी कक्ष)
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक), पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग,कोलकाता - 700 001

विषय : अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका '**वंदे मातरम्**' के बाइसवें अंक के प्रेषण की प्रतिक्रिया भेजने बाबत।

महोदय/महोदया,

आपके ई-मेल पत्र सं. पी.ए.जी. ए.ई.डब्ल्यू.बी./02/[illegible]/14/2020-21 के अंतर्गत आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका '**वंदे मातरम्**' के बाइसवें अंक के ई-संस्करण की प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। समग्र पत्रिका साज-सज्जा के दृष्टिकोण से प्रशंसा की पात्र है। विशेषतः '**लॉकडाउन के बाद की पहली यात्रा**', '**अनुभूति**', '**कहावत**', '**पहचान**', '**चुनावी चर्चे**', '**रवीन्द्र संगीत**' और [illegible] पठनीय एवं हृदय-स्पर्शी है। कार्यालय में आयोजित विविध कार्यक्रमों की झलकियों के छायाचित्र पत्रिका की सुन्दरता में चार चाँद लगाते हैं।

आशा करता हूँ कि आपकी पत्रिका '**वंदे मातरम्**' नई चेतना एवं नये विचारों से समाज को उत्कृष्ट बनाने में अपना योगदान देती रहेगी। '**वंदे मातरम्**' परिवार को पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं कुशल संपादन के लिए '**गोमती**' परिवार की ओर से ढेर सारी शुभकामनाएं।

भवदीय,

व. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)

भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
कार्यालय - महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओड़िशा, भुवनेश्वर - 751001
O/o the Accountant General (A&E), Odisha, Bhubaneswar - 751001

संख्या-हिंदी/पत्रिका/2021-22/12 — दिनांक: 30/04/2021

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (प्रशासन, हिंदी कक्ष)
कार्यालय - प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक),
पश्चिम बंगाल, कोलकाता - 700001

विषय: अर्धवार्षिक हिंदी ई-पत्रिका 'वंदे मातरम्' के बाइसवें अंक की प्रतिक्रिया का प्रेषण।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका 'वंदे मातरम' के बाइसवें अंक की एक ई-प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, एवं सराहनीय हैं। जिनमें श्री सुमित कुमार साव जी की रचना 'दर्पण', श्रीमती प्रियंका संजीव सिंह जी की 'खंडित मूर्तियाँ', सुश्री अनिता [illegible] की रचना 'कहावत' एवं श्री जितेन्द्र शर्मा जी की रचना 'अस्तित्व के लिए खतरा-प्लास्टिक', आदि रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

हिंदी प्रभारी

आपके पत्र

महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपूर
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) - II, MAHARASHTRA, NAGPUR

संख्या.राजभाषा 8(ii)/2021-22/जा.क्र. 11
दिनांक:-21/04/2021

सेवा में,
व. लेखा अधिकारी (प्रशासन हिंदी सेल),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
पश्चिम बंगाल ट्रेजरी बिल्डिंग्स,
कोलकाता-700001

विषय : अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका "वन्दे मातरम" के 22वें अंक पर प्रतिक्रिया संबंधी ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका "वन्दे मातरम" के 22वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद !

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। विशेषकर श्री आशीष कुमार, लेखाकार का लेख 'प्लास्टिक प्रदूषण', श्री नवेन्दु दासगुप्त, सहायक लेखा अधिकारी का लेख 'आत्मकथा' तथा श्री राजेश कुमार-II, डी.ई.ओ. की कविता 'एक किसान की कहानी' उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,

(श्रीमती पी.एस.शर्मा)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

'लेखापरीक्षा भवन', डाक थैली क्र.220, सिविल लाईन्स, नागपूर-440001
दूरभाष - 0712-2564806 to 2564510
फैक्स / Fax - 0712-2524130
'Audit Bhavan', Post Bag No. 220, Civil Lines, Nagpur-440001
website : http://agmaha.cag.gov.in
e-mail : agaumaharashtra2@cag.gov.in

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), UTTARAKHAND

पत्रांक: हिन्दी/राजभाषा-विविध/25-/2018-2019/ 165
दिनांक: 29.06.2021

सेवा में,

व.लेखा अधिकारी/प्रशासन हिंदी सेल
भारतीय लेखा - परीक्षा तथा लेखा विभाग
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक),
ट्रेजरी बिल्डिंग्स -2, गवर्नमेन्ट प्लेस वेस्ट,
पश्चिम बंगाल, कोलकाता - 700 001

विषय: अर्धवार्षिक ई-पत्रिका "वंदे मातरम्" के बाइसवें अंक की पावती के संबन्ध में।

महोदय,

पत्र सं.: पी.ए.जी.ए.ई.डब्ल्यू.बी./02/रा.भा./141, दिनांक: 14.04.2021 द्वारा आपकी अर्धवार्षिक ई-पत्रिका "वंदे मातरम्" की बाइसवें अंक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का मुख्य एवं अंतिम पृष्ठ आकर्षक है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक हैं। आपके कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने प्रशंसनीय लेख एवं सुन्दर कविताएं लिखने का सराहनीय प्रयास किया है। आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

'महालेखाकार भवन', कौलागढ़, देहरादून - 248195 'Mahalekhakar Bhawan', Kaulagarh, Dehradun - 248195
दूरभाष / Phone : 0135 - 2970870 फैक्स / Fax : 0135 - 2970871, ई-मेल/E-mail : agauuttarakhand@cag.gov.in

आपके पत्र

कार्यालय प्रधान महालेखाकार, लेखापरीक्षा - II
पश्चिम बंगाल
Office of the Pr. Accountant General, Audit -II
West Bengal

संख्या :- हिन्दी कक्ष/पत्रिका फाइल/ 06 दिनांक:- 10/05/2021

सेवा में,
व. लेखा अधिकारी (प्रशासन हिंदी सेल)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक), पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स,2, गवर्नमेंट प्लेस वेस्ट, कोलकाता- 700 001

विषय: अर्धवार्षिक ई- पत्रिका "वंदे मातरम" के बाइसवें अंक का प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित अर्धवार्षिक ई-पत्रिका "वंदे मातरम" के बाइसवें अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण, पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ-ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षणीय है। कविताएँ एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,

व.लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

सी.जी.ओ.कम्प्लेक्स,डी.एफ.ब्लॉक, साल्टलेक,कोलकाता-700 064
3rd MSO Building, 5th Floor, CGO Complex, DF Block, Salt Lake, Kolkata – 700 064.
Phone: (033) 2337-4916; FAX: (033) 2337-7854, e-mail:agauwestbengal2@cag.gov.in

---

भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय, महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार
बीरचन्द पटेल मार्ग, पटना-800 001
Indian Audit & Accounts Department
Office of the Accountant General (Audit), Bihar
Birchand Patel Marg, Patna-800 001

दिनांक/Date : 03/06/2021

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/प्रशासन हिंदी सेल
कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखा एवं हकदारी) पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स ,कोलकाता-700001

विषय-अर्द्धवार्षिक ई-पत्रिका "वंदे मातरम" के 22वें अंक(2020-2021)का प्रतिभाव।

महोदय,

आपके कार्यालय की अर्द्धवार्षिक हिंदी पत्रिका "वंदे मातरम" के 22 वे अंक(2020-2021)की ई-प्रति प्राप्त हुई, हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद।पत्रिका के इस अंक की साज-सज्जा और मुद्रण अत्यंत आकर्षक है। इस अंक में विविध विषयों पर केंद्रित बहुआयामी रचनाओं को संकलित किया गया है जो अर्थ और शिल्प के स्तर पर बेहद सशक्त है।रचनाएँ पठनीय और ज्ञानवर्धक भी है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के अभियान को "वन्देमातरम" ने निरन्तर आगे बढ़ाया है।इसका भविष्य और उज्ज्वल हो इसी कामना के साथ समस्त संपादकीय मण्डल और पत्रिका परिवार को पुनः बधाई और शुभकामनाएं।

भवदीय

वरीय लेखा परीक्षा अधिकारी (हिंदी)

दूरभाष/Phone - 2221226, 2221941, 2223725, 2223194, 2506091, 2506283 ई.पी.ए.बी.एक्स/EPABX-2223757, 2228320
फैक्स/Fax : 0612-250 6223, 2506207 ई-मेल/E-mail-agaubihar@cag.gov.in पो. बॉक्स/P.B.No.-47

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	टोक्यो ओलंपिक में भारत का प्रदर्शन	सुश्री स्मृति	01
2.	छोटी सी बात	श्री नबेन्दु दाशगुप्त	04
3.	डियर कोरोना	श्रीमती आस्था गुप्ता	08
4.	राष्ट्र निर्माण में युवा शक्ति	श्री अनुज साव	10
5.	आशीष	श्री रेबती रंजन पोद्दार	13
6.	मोहब्बत का पैगाम	श्री सुमित कुमार साव	16
7.	मुद्रा प्रेम	श्री सन्नी कुमार	17
8.	बंगाल की कालकोठरी	चन्दन कुमार बढ़ई	21
9.	पिता	मो. इमरान	24
10.	प्यार, नशा और हैवानियत	सुश्री अलिषा मौर्या	26
11.	पल	श्री सुमित कुमार वर्णवाल	30
12.	ऑनलाइन शिक्षा	श्री जितेंद्र शर्मा	31
13.	मन	सुश्री आरती शर्मा	37
14.	संघर्ष	श्री सूरज किशोर	38
15.	मेरा गाँव	श्री राजेश कुमार-II	41
16	पुरानी डायरी	श्रीमती सुस्मिता सरकार	43

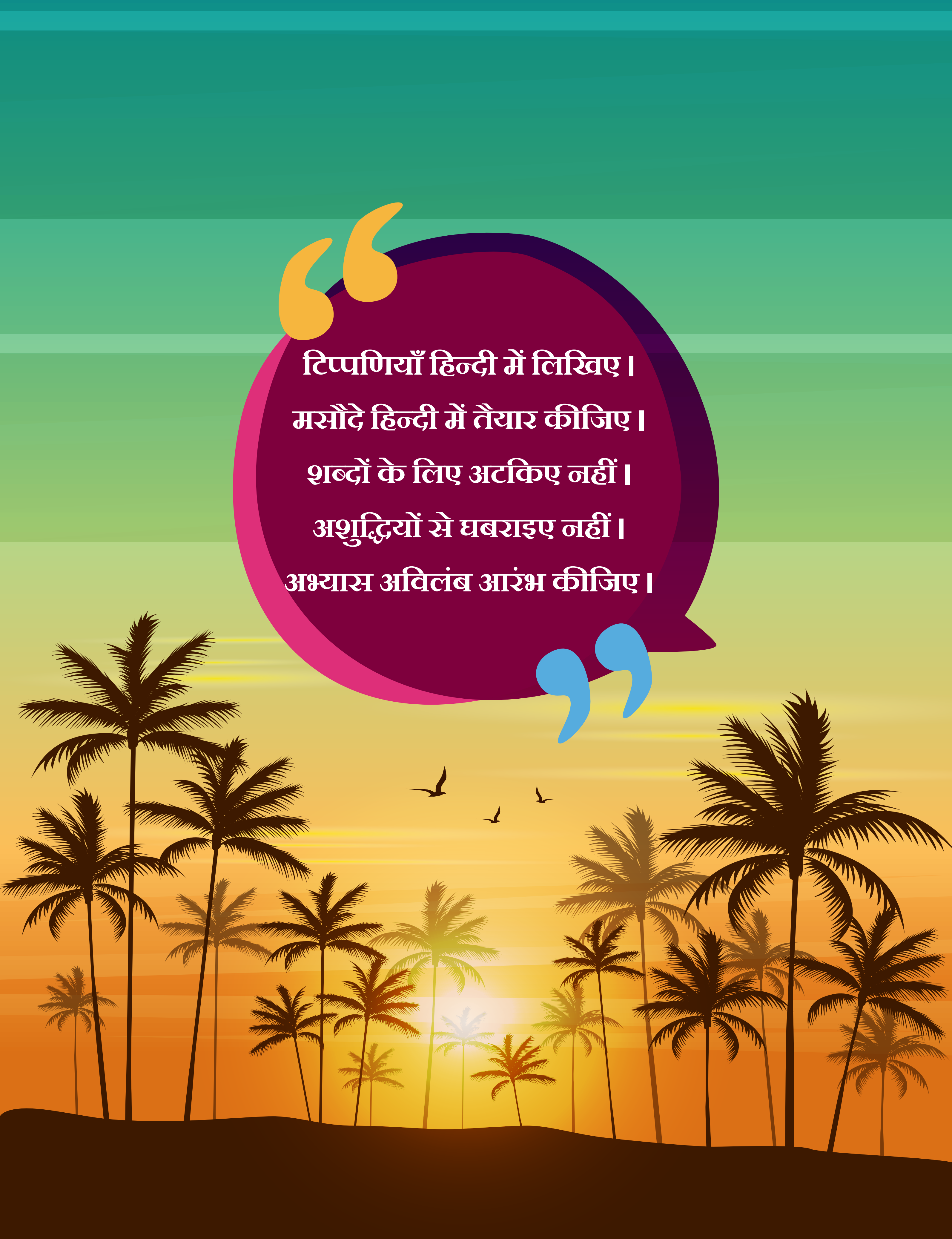
टिप्पणियाँ हिन्दी में लिखिए।
मसौदे हिन्दी में तैयार कीजिए।
शब्दों के लिए अटकिए नहीं।
अशुद्धियों से घबराइए नहीं।
अभ्यास अविलंब आरंभ कीजिए।

टोक्यो ओलंपिक में भारत का प्रदर्शन

टोक्यो ओलंपिक खेल, 2020 की शुरुआत 23 जुलाई, 2021 से जापान के टोक्यो शहर में शुरुआत हुई। भारत से 119 खिलाड़ियों सहित टोक्यो ओलंपिक के लिए 228 सदस्यीय दल भेजा गया। इन 119 खिलाड़ियों में से 67 पुरुष और 52 महिला प्रतिभागी थे। भारत ने 85 पदक स्पर्धाओं में भाग लिया। यह ओलंपिक में भारत का अब तक का सबसे बड़ा खिलाड़ियों का दल था। टोक्यो ओलंपिक का आयोजन 23 जुलाई से 08 अगस्त तक हुआ। महामारी के कारण खेलों को दौरान स्टेडियम में दर्शकों के प्रवेश की अनुमति नहीं थी।

ओलंपिक खेलों में तीरंदाज़ी में भारत की ओर से तरुणदीप राय,अतनु दास ,प्रवीन जाधव,दीपिका कुमारी ने भाग लिया। एथलीट्स में भारत की ओर से केटी इरफान (20 किलोमीटर रेस वॉक), संदीप कुमार (20 किलोमीटर रेस वॉक), राहुल रोहिला (20 किलोमीटर रेस वॉक), गुरप्रीत सिंह (50 किलोमीटर रेस वॉक), भावना (20 किलोमीटर रेस वॉक), प्रियंका गोस्वामी (20 किलोमीटर रेस वॉक),अश्विनाश सबले (300 मीटर स्टीपल चेस), मुरली श्रीशंकर (लॉन्ग जंप), एमपी जयबीर (400 मीटर हर्डल रेस), नीरज चोपड़ा (जवलिन थ्रो), शिवपाल सिंह (जवलिन थ्रो),अनु रानी (जवलिन थ्रो), तेंजद्रपाल सिंह (शॉट पुट), दुत्ती चंद (100 मीटर और 200 मीटर रेस इवेंट), कमलप्रीत कौर (डिस्कस थ्रो), सीमा पुनिया (डिस्कस थ्रो) ने भाग लिया। बैडमिंटन में पीवी सिंधु, बी साई , सिक्की रेड्डी और चिराग सेट्टी

ने भाग लिया। बॉक्सिंग में मैरी कॉम (51 किलोग्राम), विकास कृष्णा (69 किलोग्राम), लवलीना (69 किलोग्राम), आशीष कुमार (75 किलोग्राम), पूजा रानी (75 किलोग्राम), सतीश कुमार (91 किलोग्राम),अमित पंघाल (52 किलोग्राम), मनीष कौशिक (63 किलोग्राम), सिमरनजीत कौर (60 किलोग्राम) ने भाग लिया। फेंसिंग में भारत की ओर से भवानी देवी ने भाग लिया। गोल्फ में

अनिर्बान लहरी,उद्यन मने, अदित्ति अशोक ने भाग लिया। जिमनास्टिक में जिमनास्ट प्रणति नायक ने भाग लिया। भारत की पुरुष और महिला दोनों हॉकी टीम ने इस बार ओलंपिक खेलों में भाग लिया। सुशीला देवी ने भारत की ओर से जुडो में हिस्सा लिया। रोइंग में अर्जुन और अरविंद सिंह ने भाग लिया। शूटिंग में 15 भारतीय शूटरों ने भाग लिया। सजन प्रकाश ने भारत की ओर से स्विमिंग में हिस्सा लिया। टेबल टेनिस में भारत की ओर से चार खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। मीराबाई चानू ने भारत की ओर से वेटलिफ्टिंग इवेंट में भाग लिया। रेसलिंग इवेंट में भारत की ओर से सात खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया।

भारत ने 7 मेडल जीतते हुए टोक्यो ओलंपिक में इतिहास रच दिया है। वेटलिफ्टर मीराबाई चानू ने टोक्यो ओलंपिक में भारत के लिए पहला सिल्वर मेडल जीता। मुक्केबाज लवलीना बोर्गोहेन को महिला वेल्टरवेट वर्ग (69 किग्रा) में ब्रॉन्ज मेडल जीता। पीवी सिंधु ने महिला बैडमिंटन के सिंगल्स में ब्रॉन्ज मेडल जीता। भारत के पहलवान रवि कुमार दहिया ने पुरुष फ्रीस्टाइल 57 किग्रा भार वर्ग में रजत पदक जीता। भारत की पुरुष हॉकी टीम ने ब्रॉन्ज मेडल जीता। बजरंग पूनिया ने पुरुषों के फ्री स्टाइल 65 किलो वर्ग कुश्ती स्पर्धा में ब्रॉन्ज मेडल जीता। भाला फेंक(जेवलिन थ्रो) एथलीट नीरज चोपड़ा ने स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रच दिया है। वह देश के लिए व्यक्तिगत स्वर्ण जीतने वाले दूसरे खिलाड़ी

और पहले एथलीट हैं।

ओलंपिक खेलों को आज भी सर्वश्रेष्ठ अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं के रूप में मान्यता प्राप्त है। प्रतिस्पर्धा के बिना खेलों में उत्कृष्टता हासिल करना आसान नहीं है। ओलंपिक खेलों का मुख्य लक्ष्य सम्पूर्ण दुनिया में प्रतियोगिताओं के माध्यम से खेलों को बढ़ावा देकर एथलीटों को बढ़ावा देना है। इस बार के टोक्यो ओलंपिक में भारत का प्रदर्शन सराहनीय रहा है। उम्मीद है कि 2024 में पेरिस में होने वाले अगले ओलंपिक में भी भारत का प्रदर्शन स्मरणीय रहेगा।

स्मृति,
व. अनुवादक

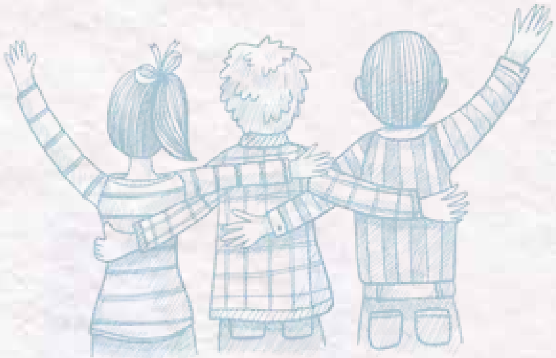

छोटी सी बात

बातचीत के दौरान या किसी काम-काज के दौरान अकसर हम यह कहते हैं .. छोड़ यार, यह छोटी सी बात है। परंतु यह भी सच है कि अकसर छोटी-छोटी बातें बहुत मायने रखती हैं और हमारे व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन को गंभीर रूप से प्रभावित करती हैं। वही छोटी-छोटी बातें हमें बड़ी शिक्षा प्रदान करती है और जीवन को सुन्दर, अनुशासित बनाकर आगे ले जाती है।

जीव जगत में हर समुदाय के जीवों के जीवन में शिक्षा एवं ज्ञान एक अविच्छेद विषय है। इसके बिना ज़िंदगी अचल है। कुछ विषय सभी प्राणी अपने आप सीख लेते हैं और कुछ विषय दूसरो से सीखने पड़ते हैं। इस मामले में प्राणी कुल में मनुष्य सबसे आगे है। मनुष्य के चिंतन-मनन एवं भाषाने ही मानव को सबसे आगे और सबसे अलग कर दिया। यह खुद सिखते हैं और दूसरो को सिखाते भी हैं।

शिक्षा के बिना ज़िंदगी जीना असम्भव है। स्वयं को जीवित और सुरक्षित रखने के लिए शिक्षा एवं ज्ञान अनिवार्य है। यह कोई नई बात नहीं है। शिक्षा की शुरूआत तो घर से ही हो जाती है और यह ज़िंदगी भर चलती है। घर के साथ-साथ समाज तथा भिन्न-भिन्न शिक्षा प्रतिष्ठान व संस्थान से शिक्षा प्राप्त होता है। इसके साथ हम जीवन से भी सीखते है। प्रतिष्ठानिक शिक्षा के प्राथमिक स्तर में किताबी शिक्षा के साथ सामान्य व नैतिक ज्ञान की शिक्षा प्रदान की जाती है जो आनेवाली ज़िंदगी को अनुशासित रखने में सहायक होती है। साथ-साथ हमारा समाज भी अनुशासित व प्रगतिशील होता है। उच्चतर शिक्षा में विषयगत शिक्षा रहती है जो मुख्यतः व्यक्ति व जीविका से जुड़ी होती है और हर कोई तो उच्च शिक्षा प्राप्त करते भी नहीं। परिवार, विद्यालय, सामाजिक रीति-रीवाज से जो मूलभूत शिक्षा प्राप्त होता है वही व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन की

नींव है। शिक्षा जहाँ से भी प्राप्त हो उसमें ज्ञान के साथ साथ जीवन की सकारात्मकता दिखाई पड़ती है। शिक्षा हीं उचित-अनूचित, भला-बुरा, सही-गलत सिखाता है।

शिक्षा का उद्देश्य तभी सफल होता है जब वास्तव में उसका सफल व्यवहारिक प्रयोग होता है। अन्यथा वह व्यर्थ है। हमारे आज की जीवनशैली में हमें अकसर यही देखने को मिलता है कि अनेक लोग छोटी-छोटी शिक्षा व ज्ञान की व्यावहारिक प्रयोग से दूर रहते है, अनदेखा करते है। इसका उदाहरण हम घर से ही शुरू करते हैं। जैसे हम कहते हैं कि जल का दूसरा नाम जीवन है और सबको सिखाता है कि जल बर्बाद करना अनुचित है। परंतु अकसर यह देखा जाता है कि पानी के नल को खुला छोड़कर लोग गप्पे मारते रहते हैं, टूथब्रश करते रहते है। बर्तन, कपड़े धोते वक्त नल खुला छोड़कर धोते रहते है। बाल्टी या गमलों में लेकर काम नहीं करते। इससे ढेरों जल बेकार बह जाते हैं। घर के बाहर आईए। रास्ते में जो नल लगा हुआ रहता है वह भी अकसर खुला मिलता है और जल बह जाता है। लोग इतना आलसी है कि जब वह नल खोलते है और देखते हैं कि नल में जल नहीं है तब उसे बंद नहीं करके खुला छोड़ निकल जाता है। बाद में जब जल आता है तो वह बह जाता है। कई आलसी लोग ऐसा देखने पर भी उसे बंद किए बिना चल देते है। तो हमने जो सिखा कि जल ही जीवन है, इसका भण्डार सीमित है, इसे बर्बाद नहीं करना चाहिए यह शिक्षा ऐसे कर्म से कैसे सफल माना जा सकता है। इस तरह के सैकड़ों काम या हरकतें, जैसे घर में जमा हुआ कूड़ा -कचरा कुड़ेदान या वैसी जगह के बदले घर के बगल वाले जमीन पर या रास्ते के किनारे इर्द-गिर्द फेंकना, रास्ता चलते समय या गाड़ी चलाते समय नियम का पालन न करना, किसी भी कतार में अनुशासित न रहना, समयानुवर्तिता का अनुपालन न करना, चारों ओर बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार आदि की तस्वीर हमारी रोज़मर्रा की जिन्दगी में आम बात है। जबकि ऐसा न करने की शिक्षा व ज्ञान हम सबको प्राप्त हुआ है। वातावरण के प्रदुषण के बारे में जानकारी होते हुए भी लोगों के व्यवहार में उचित समझदारी नहीं मिलते। इसमें सबसे बड़ी बात तो यह हे कि ऐसी हरकतें बच्चे या नासमझ लोगों से ज्यादा बड़े एवं समझदार लोग करते हैं। हमारे आज के दैनिक जीवन से अगर हम इस तरह की तस्वीर को निकाल दें तो शायद व्यक्ति एवं समाज को कर्महीन देखा जाएगा और आम जिन्दगी की तस्वीर ऐसी लगेगी कि 144 धारा जारी है। परंतु हमारा संस्कार, हमारी संस्कृति तो ऐसी शिक्षा व ज्ञान नहीं देते है। फिर भी ऐसी तस्वीरें आज केवल हमारे समाज में राज ही नहीं कर रही हैं बल्कि समाज को निगलती जा रही हें। यह तस्वीर जितना जोर पकड़ती जाएगी उतना ही हमारा

वैयक्तिक तथा सामाजिक जीवन जटिल बनता जाएगा और हमारा संस्कार व संस्कृति कमजोर पड़ता जाएगा। यह कतई अपेक्षित नहीं है। जीवन में अनुशासनहीनता जैसे-जैसे बढती जाएगी शिक्षा की विफलता उतनी ही साबित होती जाएगा।

शिक्षा हमें बताती है कि कोई सम्पद या वस्तु को बर्बाद या नष्ट नहीं करना चाहिए। परंतु वास्तव उल्टा बताते है। इस काम में हम ऐसा दो सम्पद भरपूर नष्ट करते है जिसे वापस लाना असम्भव है। वह है समय और जल। जल की बर्बादी का नमूना पहले ही जिक्र किया गया। किसी काम में अकसर समय पर न पँहुचना आदत सी बन गयी है। विलम्ब से पँहुचना तो कहीं कहीं महत्वपूर्ण माना जाता है नहीं तो उन्हें इज्जतदार नहीं समझा जाता है। वैसे व्यक्ति या वर्ग जिन्होने समय का कोई मूल्य नहीं रखा उनसे क्या शिक्षा प्राप्त हो सकता है और वे क्या मार्ग/दिशा दिखाएगा। इस मामले में दो समुदाय के लोग बाकी लोगों से अलग और आगे है। वे है किसान व जवान। इन्हें मालूम है समय ओर जल कितना महत्वपूर्ण और अनमोल है। समय पर आवश्यक कदम न बढ़ा पाए तो कितना मुशकिलों से गुजरना पड़ता है इन लोगों से भला और कौन जाने।

हमारे रोज की आम जिन्दगी में अक्सर यह देखा जाता है कि बातचीत एवं व्यवहार में अनेक गलतियॉं को महत्व न देकर अनदेखा कर देते है यह कहकर – छोड़ दीजिए, जाने दीजिए ......। हालॉंकि वैसा कहने के बाद जो गलत किया उन्हें आराम से समझाना चाहिए कि वह जो किया, ठीक नहीं किया और भविष्य में वैसा न करे ताकि उन्हे उनकी गलती का एहसास हो एवं सुधर जाए। लेकिन ऐसा न कर उन्हें छोड़ देने से वह भविष्य में अनूरूप गलती करने में दोबारा नहीं सोचते। ऐसी छोटी-छोटी वातों को अनदेखा करने एवं अमल न देने की आदत आदत व्यक्ति व समाज जीवन को साधारण चित्र बन गया है। वर्तमान में घर हो या बाहर हर जगह गुमराह होने का उपकरण का कोई कमी नहीं है। उचित शिक्षा के साथ व्यक्तित्व निर्माण ही हमें इससे दूर रखने में सहायता होंगे।

हमारे आज की जीवनशैली में ऐसे नकारात्मक काम-काज की तस्वीर हरकदम इतना बढ़ गया है उससे यह अनुमान लगाना गलत नहीं होगा कि हमारी शिक्षाप्रणाली के साथ-साथ हमारे जीवनशैली में कहीं न कहीं कमियॉं आयी है। जिसके कारण हमारा समाज जीवन में यह नकारात्मक चित्र दिखता है। हम अगर 30-40 साल पीछे चलेंगे और उस समय के जीवनशैली के साथ तुलना करेंगे तो जरूर

फर्क नजर आएगा। उस समय तक विद्यालय में पढ़ाना को अध्यापन माना जाता या कहा जाता था। शिक्षक तथा अध्यापकगण उसे सेवा मानते थे। लोग आजकल अध्यापन जैसी जीविका/पेशे को नौकरी कहने लगे। जब देखने का नजरिया बदल जाता है तो धीरे-धीरे उसका अर्थ एवं मतलब भी बदल जाता है। और यहीं पर गुणवत्ता और उद्देश्य पर सवाल आ जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में आजकल एक महत्वपूर्ण समस्या यह भी है कि इस क्षेत्र में विद्वान लोग कम आ रहे हैं। ज्यादातर विद्वान प्रवंधन एवं अन्य क्षेत्र में ध्यान दे रहे हैं।

यह प्रवृत्ति साफ बताते है शिक्षा व अध्यापन के विषय पर समाज का दृष्टिकोण बदल गया है। शिक्षा में सबसे महत्वपूर्ण है अनुशासन की शिक्षा। अनुशासन के बिना जिन्दगी में सबकुछ अधूरा एवं अर्थहीन है। परंतु अनुशासनहीनता हमारे वर्तमान जीवनशैली में आम बात हो गया है। कारण, वही छोटी सी वात, **जाने दो यार ....**

नबेन्दु दासगुप्त
सहायक लेखा अधिकारी

डियर कोरोना

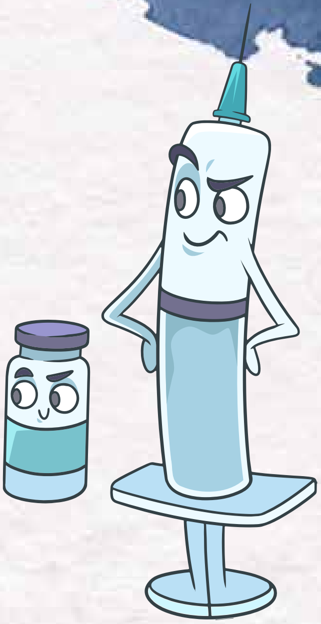

जब दुनिया पर गहरा संकट था छाया,
हर जगह खौफ का माहौल किसने फैलाया?
कैद हो गयी ज़िंदगी अपने पिंजरों में,
ऐसी तबाही लेकर भला कौन है आया?

सबसे पहली बार जब नाम सुना सबने,
जाने क्या क्या कह कर उसका मज़ाक उड़ाया,
सिट्टी पीट्टि गुम हुई सबकी ,
जब उसने अपना असली रंग दिखाया।

मिट्टी में खेले हैं हम, हमें किसी का डर कहाँ?
उनका हकीकत से सामना कराया।
उन्हे अपने चंगुल में फंसाया,
उन्हे भी सच्चाई का आईना था दिखाया।

लोगों के डर के मारे पसीने छूटे थे।
सबने 'गो कोरोना गो' का नारा भी लगाया।
उम्मीद जहां भी दिखी वहाँ गए सब,
थाली भी पीटी और घरों में दीप भी जलाया।

कई जगह पशु पक्षी घूमते नज़र आए।
इंसान की खोज में सड़कों पे निकल आए।
क्या कोई चमत्कार हुआ, कहाँ गयी सब गाड़िया?
उनकी दुविधा भला, अब कौन मिटाये?

किसी ने गोमूत्र का सहारा लिया,
किसी ने काढ़े को अपनाया।
कोई बन गया मास्टरशेफ,
तो किसी ने नियमतः योग अपनाया।

ओज़ोन होल का उपचार हुआ,
देशी नुस्खों का प्रचार हुआ।
किसी मददगार की वाह-वाही से ट्विटर भर गया।
और मास्क सैनीटाइज़र का जमकर व्यापार हुआ।

वैक्सीन अब जल्दी से बस आ जाओ।
कोरोना को जितनी दूर हो सके, उतनी दूर भगाओ।
मास्कमुक्त सांस लेनी है, कोरोना थोड़ी कृपा करो।
तुम भी थोड़ा घूमो और मास्क को भी घुमाओ फिराओ।

आस्था गुप्ता
लेखाकार

राष्ट्र निर्माण में युवा शक्ति

उपरोक्त विषय में मुख्यतः दो शब्दों का प्रयोग हुआ है- पहला "युवा शक्ति' और दूसरा राष्ट्र-निर्माण। अत: पहले यह समझ लेना समीचीन होगा कि युवा-शक्ति और राष्ट्र निर्माण से हमारा क्या तात्पर्य है। युवा शब्द परिभाषित नहीं है। युवा कोई भी हो सकता है। यह हर प्राणी की अपनी सोच और शारीरिक क्षमता पर निर्भर करता है। एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति भी ऊर्जा से ओत-प्रोत अपने आपको मन से युवा मानता है, किन्तु कुछ 35 से ऊपर आयु वाले यह समझ बैठते हैं कि उन्होंने अपना लक्ष्य निर्धारित कर लिया है और वे कम्फर्ट जोन में आ गये हैं, अत: ले देकर राष्ट्र निर्माण का भार 15 से 35 वर्ष के युवाओं के कन्धों पर आ टिकती है। 2015 के जनसंख्या के आंकड़ों के अनुसार भारत में 160 करोड़ 15 से 35 वर्ष की आयु के युवा है और भारत की औसत आयु 29 वर्ष है। जो भारत को विश्व से सबसे युवा आबादी वाला देश बनाता है। अत: भारत को एक युवा राष्ट्र भी कहा जा सकता है।

राज्य की शक्ति का उपयोग करते हुए राष्ट्रीय पहचान का निर्माण करना ही राष्ट्र निर्माण है। यह एक सामाजिक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा कुछ समूहों में राष्ट्रीय चेतना प्रकट होती है। किसी भी देश, समाज और राष्ट्र के विकास की प्रक्रिया के आधारभूत तत्व सामाजिक आर्थिक दृष्टिकोण वैचारिक, स्पष्टता और सांस्कृतिक विकास ही होते है, जिससे वहां के लोग आपसी भाईचारे की मदद से विकास की नैया को आगे ले जाते है। राष्ट्र निर्माण का वास्तविक अर्थ नागरिकों के चरित्र निर्माण एवं

उनके व्यक्तित्व के निखार में है और हमारा प्रदेश एक युवा राष्ट्र होने के नाते युवाओं के चरित्र का निर्माण होना बहुत जरूरी है। युवा किसी भी राष्ट्र का संरचनात्मक और कार्यात्मक ढाँचा है। हर राष्ट्र की सफलता का "आधार उसकी युवा पीढ़ी और उनकी उपलब्धियों होती है। राष्ट्र का भविष्य युवाओं के सर्वांगीण विकास में निहित है। इसलिये राष्ट्र निर्माण में वे सर्वोच्च भूमिका निभाते हैं। संयुक्त राष्ट्रसंघ के पूर्व महासचिव कोफी अन्नान का कहना था- "Young People are key agents of development and must be at the forefront of global change and innovation." युवाओं में रचनात्मक कौशल होता है। यदि युवा वर्ग स्वतंत्र हो, संगठित हो तथा उसे सही मार्गदर्शन दिया, उसमे मनोभाव एवं इच्छाशक्ति पैदा की जाए तथा उसके जोश को सही दिशा व गति दी जाये तो युवा पीढ़ी सफलता के झण्डे गाड़ सकती है। नेल्सन मण्डेला भी कहा करते थे- "आज का युवा कल का नेता है।"

युवा देश का वर्तमान है, तो भूतकाल और भविष्य का सेतु भी है। युग देश और समाज के जीवन मूल्यों का प्रतीक है। पण्डित जवाहर लाल नेहरू का मानना था - "The children of way today will make the india of tommorow. The way we bring them will determine the future of the country." आज युवा पीढ़ी के उत्थान के लिये कई संगठन काम कर रहे हैं। सरकार द्वारा प्रस्तुत की गयी 'राष्ट्र युवा नीति 2014' का उद्देश्य -" युवाओं में क्षमता को पहचानना और उसके अनुसार उन्हें अवसर प्रदान कर उन्हें सशक्त बनाना और उसके माध्यम से विश्वभर में भारतवर्ष को उसका सही स्थान दिलाना है।" सम्पूर्ण भारतवर्ष में राष्ट्र युवा दिवस 12 जनवरी को स्वामी विवेकानन्द के जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है। राष्ट्र युवा दिवस 2019 का विषय "Channelizing Youth Power for Nation Building" था। विवेकानन्द ने भी राष्ट्र के युवाओं को कुछ इस प्रकार आह्वान किया था- "उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक लक्ष्य की प्राप्ति ना हो जाए।"

भारत में युवाओं की संख्या तकरीबन अन्य सभी देशों के अपेक्षा सबसे अधिक है, लेकिन दुर्भाग्य से युवा शक्ति के भीतर जोश के साथ-साथ आक्रोश भी है, किन्तु यह आक्रोश निराधार नहीं है। इसके पीछे उनकी बेरोजगारी, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की कमी, आर्थिक संकट, सामाजिक असमानता, अपर्याप्त संसाधन जैसी कई समस्याएं हैं। बालिका शिक्षा पर भी कई जगहों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता है। जब समाज का एक वर्ग उपेक्षित हो, तो समग्र विकास कैसे हो सकता है। युवाओं के लिये देश में संसाधनों तथा सम्भावनाओं की कमी नहीं है, यदि कमी है, तो

युवा शक्ति को उन सम्भावनाओं को सकारात्मक परिणति में बदलने हेतु सुनियोजित ढंग से रुपरेखा तैयार करने की। वर्तमान में युवाशक्ति का सार्थक उपयोग देखना चाहे तो दिल्ली मेट्रो का उदाहरण ले सकते हैं। दिल्ली मेट्रो में कार्यरत कर्मचारियों में लगभग 75% युवा हैं। उन्हें दिशा देने का काम एक महान एवं अनुभवी व्यक्ति डी.एम. आर.सी. के प्रबंध निदेशक ई. श्रीधरन ने किया। इस विभाग का शायद ही कोई प्रोजेक्ट हो तय सीमा के भीतर पूरा न हुआ हो और इसमें शायद ही कभी कोई भ्रष्टाचार हुआ हो। दिल्ली मेट्रो की युवा शक्ति ने अदम्य इच्छाशक्ति का परिचय दिया है, जिसके दम पर दिल्ली की विषम भौगोलिक परिस्थितियों में भी मेट्रो का संचालन सम्भव हो सका। स्पष्ट है की उचित मार्गदर्शन, उत्कृष्ट प्रबंधन और अदम्य इच्छाशक्ति सही रास्ते पर ले जा सकती है। नवयुवकों की सहायता से ही राष्ट्रनिर्माण करना सही और इसके सबके पीछे मूलतः हमारे वरिष्ठ नागरिको का मार्गदर्शन स्वाभाविक है। यह सर्वविदित है कि -"रवि रहेगा जिसके पीछे, वही अरुण भेदेगा तम।" सर्वोदय, सबकी एक साथ उन्नति तभी सम्भव है जब हम स्वयं का चरित्र निर्माण कर सफलता के मार्ग पर अग्रसर हों एवं विश्व के चरित्र निर्माण में योग दें तथा दूसरों की सफलता में भी सहायक बनने की महती भूमिका का निर्वाह करें।

अनुज साव,
एम.टी.एस.

आशीष

एक गाँव में भिक्षा मांग कर जीवन यापन करने वाला एक ब्राह्मण रहता था। उसके सांसारिक जीवन में केवल उसकी पत्नी थी। वह ब्राह्मण इतना गरीब था कि उसे पूरा दिन भिक्षा मांगने में लग जाता था। सूर्य उगने से पहले ही वह अपनी कुटिया से निकल जाता था, भिक्षा मांगने के क्रम में वह दूर बसे गाँव में भी चला जाता था। वह पूरे दिन भिक्षा मांगने के उपरांत शाम में अपनी कुटिया में वापस लौटता था। उसकी पत्नी उसके लौटने का इंतजार किया करती थी। भिक्षा के रूप में मिले चावल, दाल आदि को वह अपनी पत्नी को सौंप दिया करता था। तत्पश्चात उसकी पत्नी चावल-दाल पकाती तथा दोनों एकसाथ मिलकर भोजन ग्रहण किया करते थे।

इस तरह से उनका जीवन गुजर रहा था। गाँव के सभी लोगों को मालूम था कि यह गरीब वृद्ध ब्राह्मण दंपति भिक्षा मांग कर अपना गुजर-बसर करते थे।

एक दिन वह ब्राह्मण किसी गाँव में पहुंचा वहाँ कई घरों में भिक्षा माँगा परंतु उसे किसी भी घर से कोई दान प्राप्त नहीं हुआ। दोपहर के समय वह गाँव से होकर बहने वाली छोटी नदी के किनारे पहुंचा। वह अपनी पोटली वहाँ सीढ़ियों पर रख दिया और विश्राम करने के क्रम में सोचने लगा “आज का दिन काफी बुरा रहा, यदि मैं आज बिना भोजन के घर पहुँचा तो अपनी पत्नी को पकाने के लिए क्या दूंगा? वह आज क्या खाएगी?” ऐसा विचार आने पर उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। अंत में उसने खुद को समझाया कि शायद आज भगवान की यही इच्छा है तो क्या किया जा सकता है।

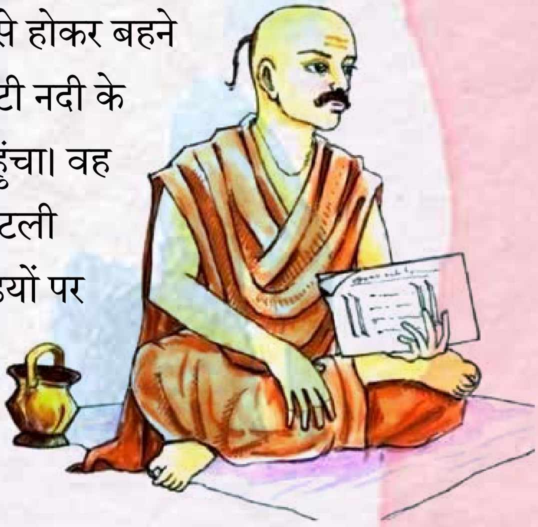

वह नदी में स्नान करने के लिए उतरता है। नदी के तट पर एक बरगद का पेड़ था जहां देवी लक्ष्मी तथा देवी सरस्वती दोनों आपस में बातचीत कर रही थी। देवी सरस्वती अपनी बहन देवी लक्ष्मी से कहती है “वह गरीब ब्राह्मण आज सुबह से ही

दान के लिए दर-बदर भटक रहा है परंतु उसे दान स्वरूप कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ है। खाली हाथ घर लौटने की बात सोचकर वह अत्यंत चिंता से व्याप्त है। उसकी पत्नी भी भोजन की प्रतीक्षा कर रही होगी लेकिन आज दोनों को भूखे पेट सोना पड़ेगा। बहन! कृपया करके इनकी सहायता करें।" देवी लक्ष्मी कहती हैं हाँ तुम सही कह रही हो, मैं इस गरीब इंसान के लिए अवश्य ही कुछ करूंगी"।

वह गरीब ब्राह्मण स्नान करने के पश्चात वापस घर लौटने वाला था। फिर जैसे ही वह अपनी पोटली उठाने के लिए बढ़ता है और पोटली खोलकर देखता है तब वह आश्चर्यचकित हो जाता है। वह क्या देखता है कि उसकी पोटली में चावल, दाल और सब्जियाँ थी। वह सोचने लगता है "यह दान किसने दिया जब से मैं यहाँ पहुंचा हूँ, इधर से किसी को गुजरते भी नहीं देखा हूँ। ऐसा कैसे संभव हो सकता है।" बाद में वह इसे भगवान का आशीष समझकर खुश हो जाता है। वह अपनी आँखें बंद कर दोनों हाथों को जोड़कर प्रणाम की मुद्रा में इस आशीष के लिए भगवान को नमन करता है और तत्पश्चात अपने घर के तरफ निकल पड़ता है।

घर पहुँच कर वह अपने पोटली अपनी पत्नी तो देता है तथा उसे खाना पकाने को कहता है। उसने आज की घटना के बारे में उसे कुछ नहीं बताया। उसकी पत्नी देखती है कि आज दान के रूप में प्राप्त चावल, दाल और सब्जियाँ पहले की तुलना में काफी कम थे। वह अपनी पति से कहती है कि उसे आज काफी कम मात्रा में दान प्राप्त हुआ है। ब्राह्मण कहता है कि जाने दो जो प्राप्त हुआ है वह एक दिन के लिए पर्याप्त है।

उसकी पत्नी ने उस अनाज को पकाना शुरू किया और खाना तैयार होने के बाद दोनों खाने के लिए आसन ग्रहण किए। दोनों ने उतना भोजन किया जितनी उनकी आवश्यकता थी और कुछ भोजन बर्तन में भी बच गया था। उनको आज का भोजन भी अत्यंत स्वादिष्ट लगा। वे लोग काफी आश्चर्यचकित थे कि कैसे इतनी कम मात्रा का भोजन उन दोनों के लिए पर्याप्त हो पाया।

अगले दिन फिर प्रत्येक दिन की भांति बूढ़ा ब्राह्मण अपने घर से दान मांगने के लिए निकलने वाला था। लेकिन जब वह अपनी पोटली उठाता है तब वह देखता है कि उसमें वही सारे अनाज मौजूद थे जो उसे नदी के तट पर मिला था। वह अपनी पत्नी से पूछता है कि क्या उसने पोटली का सारा अनाज नहीं पकाया था? उसकी पत्नी ने जवाब दिया कि उसने पोटली में मौजूद सारा अनाज पका दिया था।

अब वह ब्राह्मण आश्वस्त हो जाता है कि यह भगवान का आशीष है। वह नदी के तट की तरफ दौड़ते हुए जाता है। वहाँ पहुंचकर नम आँखों से भगवान को प्रकट होने की विनती करता है। वह घंटों तक प्रार्थना करता है।

अंततः देवी लक्ष्मी प्रसन्न होकर उसके समक्ष

प्रकट होती हैं और कहती है "हाँ, कल मैंने ही तुम्हें वह अनाज प्रदान किया था क्योंकि तुम्हे उस दिन कोई भी दान प्राप्त नहीं हुआ था"। वह ब्राह्मण कहता है "माँ वह पोटली आज फिर से स्वतः उतने ही अनाजों से भर गयी है।" देवी लक्ष्मी कहती हैं "हाँ, तुम और तुम्हारी पत्नी बहुत हु वृद्ध हो चुके हो, इसलिए अब तुम्हें भीख मांगने की जरूरत नहीं है। प्रत्येक दिन तुम इस पोटली में इतना अनाज पाओगे जो कि तुम दोनों के पर्याप्त होगा।" इसके बाद देवी लक्ष्मी अदृश्य हो गई।

गरीब ब्राह्मण अपने घर लौटता है और सारी बातें अपनी पत्नी को बता देता है। उसके बाद से वे दोनों अपना जीवन खुशी-खुशी व्यतीत करने लगते हैं।

रेबती रंजन पोद्दार
व. लेखा अधिकारी

हिंदी पखवाड़ा-2021 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लेते प्रतिभागीगण ।

मोहब्बत का पैगाम

सिकंदर तुमने झूठा जहाँ जीता था, मैं दिल जीतने आया हूँ,
नफ़रतों की सरहदों पर, मैं मोहब्बत लूटने आया हूँ।
अलग है ख्याल तेरे मेरे से
तुमने झूठी शान रचाई, जुल्म तुम्हारे रगों में था।

मैं मोहब्बत का मतवाला, मन से मन को मिलाने आया हूँ।
घड़ी-घड़ी, हर दो घड़ी, हर पल, हर घड़ी मैं दिलों में मोहब्बत लिखने आया हूँ।
मैं मोहब्बत का सार हूँ, मोहब्बत से मोहब्बत बिखेरने आया हूँ।
सिकंदर तुमने झूठा जहाँ जीता था, मैं दिल जीतने आया हूँ,
नफ़रतों की सरहदों पर, मैं मोहब्बत लूटने आया हूँ।

सुमित कुमार साव
एम. टी. एस.

मुद्रा प्रेम

यह बात काफी पुरानी है। जब मनुष्य कोई भी वस्तु खरीदने के लिए आपस में वस्तुओं का आदान प्रदान किया करते थे। उस समय मुद्रा का आविष्कार नहीं हुआ था। इसके बावजूद भी लोग खुशी पूर्वक रहा करते थे। ज़िंदगी में ठहराव था। लोगों में किसी चीज को लेकर भाग-दौड़ नहीं थी। लेकिन जब मुद्रा का आविष्कार हुआ उसके बाद से ज़िंदगी मानो करवट ले ली। जैसे-जैसे मुद्रा का विकास हुआ लोगों में मुद्रा पाने की ललक बढ़ने लगी। वो कहते हैं न बाप बड़ा न भैया सबसे बड़ा रुपया पूरी तरह से चरितार्थ हो गया। मुद्रा प्रेम भी एक गज़ब सी प्रेम कहानी है। लोगों के प्राण इसमे बसने लगे। आस पास की ही खबरों पर ध्यान देने पर मालूम पड़ता है। सीताराम जी की बहू मर गई आखिर क्या हुआ था। पैसे बचाने के कारण हॉस्पिटल नहीं ले गए इस कारण से मौत हो गई। और थोड़ा दूसरी गली की खबर पर ध्यान देते हैं। वर्मा जी की लड़की सभी गहने-पैसे लेकर प्रेमी के संग भाग गई। इस तरह की खबरें हमारे आगे पीछे घूमती रहती है। फिर भी दोस्तों आज की जो कहानी है उस पर ज्यादा सोचने की जरूरत बिल्कुल ही नहीं है। यह कहानी एक मुद्रा प्रेमी की है। हाँ सही कहा एक कंजूस की कहानी। आइये इस काल्पनिक कहानी में प्रवेश करते हैं।

यह कहानी एक गाँव के किसान परिवार की है। उस समय हमारा देश आजाद ही हुआ था। जयराम आठवीं पास था। उसे पढ़ने का काफी शौक था। अपने पूर्वजों की तरह वह खेती नहीं करना चाहता था। इसलिए किसी तरह से वह खेती करने से बचना चाहता था। फिर क्या था दौड़ गया पुलिस की बहाली में। नौकरी लगने के बाद केवल 19 वर्ष की आयु में ही जयराम की शादी हो गई। उसे एक प्यारा सा बच्चा हुआ। घर में खुशियों का

माहौल था। उस बच्चे का जन्म कृष्ण जन्माष्टमी के दिन हुआ था। इस कारण से उसका नाम कृष्णलाल रखा गया। कृष्णलाल धीरे-धीरे बड़ा होने लगा। उसका नामांकन सरकारी प्राथमिक विद्यालय में करवा दिया गया। वह पढ़ने में अच्छा था। वह अपने पिता की तरह ही लंबा-चौड़ा था। आठवीं कक्षा पास करते ही वह दौड़ने का अभ्यास शुरू कर दिया। उसे भी अपने पिता की तरह नौकरी करना था। उस समय पुलिस विभाग में नौकरी पाना आसान था। इसी के साथ कृष्णलाल ने मैट्रिक की परीक्षा भी पास कर लिया था। वक़्त के साथ उसकी लंबाई भी लगभग छह फीट हो गई थी। उसकी उम्र लगभग 20 साल की होगी तब उसे सफलता प्राप्त हुई। वह पुलिस विभाग में होनेवाली शारीरिक परीक्षा पास कर लिया था। इस तरह से वह अपना सपना पूरा किया। कृष्णलाल की शादी भी हो गई थी। कृष्णलाल की पोस्टिंग किसी जिले की जेल में हुई।

इस कहानी में एक बार और पीछे जाने की जरूरत है। कृष्णलाल बचपन से ही पैसे जमा करने का शौक रखता था। उसके पास नाना प्रकार के सिक्के थे। जैसे जैसे वह बड़ा होता गया वैसे -वैसे सिक्के भी ढेर सारे जमा हो गए थे। जब वह मैट्रिक पास किया था तब उसने पोस्ट ऑफिस में अपना बचत खाता खुलवाया था। उसके गाँव में ही पोस्ट ऑफिस उपलब्ध था। उसने लगभग 200 रुपये के सिक्के जमा किए थे। उस जमाने में एक पैसा का भी सिक्का चलता था। उस समय 200 रुपए एक बड़ी रकम मानी जाती थी। मतलब वह राशि कृष्णलाल की बचपन की कमाई थी जो उसे घरवाले एवं रिश्तेदारों आदि से प्राप्त हुए थे। कृष्णलाल का यह मुद्रा प्रेम बचपन में ही लग गया था। जो बच्चा अपने बचपन में ही बिस्कुट, चॉक्लेट, मिठाई, खिलौना आदि खरीदने के बजाए पैसे जमा करने लगे तो यह प्रेम का बंधन कितना मजबूत और गहरा होगा।

कृष्णलाल की तैनाती शुरुआत में जेल की गेट पर की गई। जेल में कैदी बंद होते हैं। इस कारण से कैदियों के रिश्तेदार मिलने हेतु प्रायः जेल आया करते थे। कृष्णलाल रिश्तेदारों की लंबी कतार से परेशान रहता था। उसे रिश्तेदारों की सूची भी रजिस्टर में लिखना होता था। बहुत परेशान रहता था कृष्णलाल। लगभग 2 वर्ष गुजर चुके थे। एक दिन कृष्णलाल अपने कमरे में सोया हुआ था। उसकी नजर कमरे की फर्श पर पड़ी। तभी उसने देखा कि कमरे में एक छोटा सा छेद हैं जहां ढ़ेर सारी चींटियाँ कतार बनाकर उस छेद में जा रही हैं। सभी के पास कुछ छोटे-छोटे टुकड़े थे। वहीं छेद के द्वार पर एक बड़ी चींटी खड़ी थी। सारी चींटियाँ उसके पास थोड़ी रुकती और अपने अपने टुकड़ों को सूंघने देते। इस दृश्य को देखकर कृष्णलाल की अपनी ड्यूटि याद आ गई। चींटी द्वारा टुकड़े को

सूंघने वाली बात उसे अजीब लगी। कुछ सोचने के बाद वह हँसता है। फिर ड्यूटि पर चला जाता है। वह अपने साथी दोस्त के कान में कुछ कहता है। फिर वही रिश्तेदारों के कतार लग जाते हैं। पर उस दिन कुछ अलग हुआ था। कृष्णलाल ने कैदियों से मिलने के लिए रिश्तेदारों से मुद्रा की मांग कर दिया। मुद्रा इतना छोटा था कि कतार में खड़े लोगों ने भी इसका विरोध नहीं किया था। जो काम उबाऊ और आलस से भरा सा लगता था अब वह तरोताजा करने वाला लगने लगा। वह प्रेम कहानी जो बचपन से चली आ रही थी अब भी जारी रही। काफी खुश रहने लगा कृष्णलाल। वह छुट्टी लेकर जब भी घर जाता था तब चावल की बोरी में सारे मुद्राएँ मिला देता था। उस समय चोरी आम बात थी। इसलिए उसने ऐसा उपाय सोचा था। चावल की बोरी भी जेल की ही थी। कैदियों के लिए बनने वाले खाने का राशन भी वहाँ के वर्दी वाले उपयोग किया करते थे। इस तरह से कृष्णलाल अपने गाँव के पोस्ट ऑफिस में अब सावधि जमा करने लगा था। उसकी मुद्राएँ दिन प्रतिदिन बढ़ती चली जा रही थी।

कृष्णलाल को दो पुत्र की प्राप्ति हुई। अब तो पढ़ाई में मुद्राएँ लगने वाले थे। लेकिन कृष्णलाल ने इससे बचने के लिए उनका नामांकन सरकारी विद्यालय में कर दिया था। कृष्णलाल का मुद्रा प्रेम वक़्त के साथ बढ़ते ही जा रहा था। वह अब दुकानों, सब्जीवालों आदि से भी वसूली करने लगा था। उसका वसूली करने का तरीका भी अलग था। जैसे-सब्जी वालों से कुछ सब्जी ले लेना तो दुकान वालों से जरूरत की चीजें ले लेना। इस तरह से मुद्रा के प्रेम में पड़कर वह रास्ता भटक गया।

कुछ वर्षों के बाद कृष्णलाल की तैनाती जेल के अंदर हो गई थी। काफी उदास हो गया था वह क्योंकि उसका प्रेम प्रसंग अभी खतरे में आ गया है। फिर से नौकरी उबाऊ लगने लगी। शरीर और दिमाग के बीच असंतुलन उत्पन्न हो गया था। जेल के अंदर नौकरी करते-करते वह खुद को भी एक कैदी समझने लगा था। वो कहते हैं न कि प्रेम में पागल हो जाना ठीक उसी प्रकार मुद्रा की जुदाई इसे पागल कर रही थी। लेकिन कृष्णलाल फिर से उठा। वह जेल के अंदर हर एक छोटी से छोटी चीजों पर गौर करने लगा। वह लगभग 2 महीने तक जेल के अंदर होने वाली सारी हलचलों पर ध्यान दिया। वह देखता

है कि कैदियों से मिलने वाले लोग कुछ सामान उनको देते हैं। अब उस सामान की खोजबीन वह करने लगता है। तब वह देखता है कि वे सामान वास्तव में नशा वाले पदार्थ थे। जैसे- गुटखा, पान, मसाला, बीड़ी, सिगरेट आदि। जहां चाह वहाँ राह इस बात को कृष्णलाल ने चरितार्थ कर दिया था। अब उसने मुद्रा पाने के लिए मुद्रा का प्रयोग किया। वह सभी नशीले पदार्थ खरीदकर अपने पास रख लेता था तथा जेल के अंदर कैदियों के लिए एक चलता फिरता पान की दुकान बन गया था। इस तरह से 5 रुपये का सामान 10 रुपये में बेचकर वह अपनी प्रेमी के करीब पहुँच गया था। उसका दुकान काफी शानदार चल रहा था मानो कोई सिनेमा पहले दिन ही ब्लॉकबस्टर हो गया हो। यह सिलसिला लगभग 5 वर्ष चला। फिर कृष्णलाल का स्थानांतरण ट्रेफिक पुलिस में हो गया। वहाँ मुद्रा अर्जन के कार्य में बाधा नहीं होगा। कृष्णलाल एक सच्चे मुद्रा प्रेमी थे।

सन्नी कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

बंगाल की कालकोठरी

बंगाल औपनिवेशिक भारत का केंद्र बिंदु था। कदाचित बंगाल ने विदेशी उपनिवेशवाद का दंश सर्वाधिक झेला है। यहाँ की सड़कें, नदियाँ, मैदान और इमारतें खूनी संघर्ष, सत्ता परिवर्तन राजनीतिक उठापटक की साक्षी रही हैं।

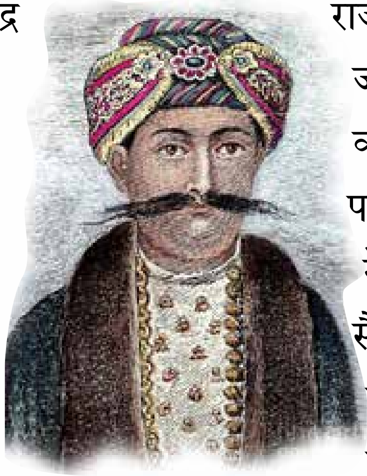

मुगल शासक औरंगजेब की मृत्यु 1707 में हुई। उसके बाद ही मुगल शासन का पतन एवं विदेशी उपनिवेशी ताकतों का प्रभाव बढ़ना आरंभ हुआ। बंगाल का क्षेत्रफल तब बेहद विस्तृत था। उस समय के बंगाल में अविभाजित बंगाल, बिहार, झारखंड और उड़ीसा के अधिकांश क्षेत्र सम्मिलित थे।

बंगाल के नवाब अलीवर्दी खान के बाद उनके युवा नाती सिराजुद्दौला बंगाल के नवाब बने। इधर अंग्रेजों ने कोलकाता में किला निर्माण और फैक्ट्रियों के प्रसार का काम तेजी से करना शुरू किया था। सिराजुद्दौला को ईस्ट इंडिया कंपनी का यह रवैया बिल्कुल पसंद नहीं आया। बंगाल के नवाब की हैसियत से उन्होंने अंग्रेजों से अधिकार के दुरुपयोग के लिए जवाब तलब किया। कंपनी राज द्वारा संतोषजनक उत्तर नहीं दिए जाने के कारण नवाब सिराजुद्दौला ने कोलकाता अवस्थित अंग्रेजी किलों पर हमला कर दिया। सिराज की सेना ने आसानी से ईस्ट इंडिया कंपनी के सैनिकों को हरा दिया। सिराजुद्दौला ने अंग्रेजों के फोर्ट विलियम की चहारदीवारी को ढहा दिया तथा फोर्ट विलियम को अपने कब्जे में ले लिया। यह घटना 20 जून 1756 की है। आला अंग्रेजी अफसर चुपके से अपने परिजनों के साथ हुगली नदी के रास्ते सुरक्षित स्थानों पर भाग गए।

सिराजुद्दौला द्वारा हारे जाने के बाद जोनाथन हॉलवेल नामक एक जूनियर अधिकारी ने अन्य सभी अंग्रेजी सैनिकों के साथ आत्मसमर्पण कर दिया। फोर्ट विलियम अब पूरी तरह सिराजुद्दौला के कब्जे में था। सिराजुद्दौला किसी विजेता राजा की भांति फोर्ट विलियम में ही अपना दरबार लगाया और कलकत्ते का नाम अलीनगर करने का ऐलान किया। सिराज के समक्ष सभी अंग्रेज अधिकारी एवं उनके सैनिक सिर झुकाए खड़े

थे। सिराजुद्दौला ने उनसे उनके बड़े अधिकारियों के बारे में विस्तार से पूछा। उनके पलायन किए जाने पर उन्हें खूब कोसा, पर किसी अंग्रेज सैन्य अधिकारी से बुरा बर्ताव नहीं किया। कुछ समय पश्चात सिराजुद्दौला फोर्ट विलियम के ही एक कमरे में आराम करने चले गए।

इधर सिराजुद्दौला के सैनिकों ने अंग्रेजों से कीमती वस्तुओं की लूटपाट शुरू की, जिससे उनमें नोकझोंक होने लगी। दोनों पक्ष के सैनिकों में इस हद तक बात बढ़ गई कि एक अंग्रेज सैनिक ने सिराजुद्दौला के एक सैनिक को गोली मार दिया।

यह खबर जब सिराजुद्दौला तक पहुंची तो वह बेहद नाराज हुआ। सिराजुद्दौला से किसी ने कहा कि इस किले में एक जेलनुमा कोठरी भी है जिसे अंग्रेज अधिकारी कैदियों को रखने के लिए इस्तेमाल करते थे। सिराजुद्दौला ने सभी अंग्रेजों को उसी कोठरी में कैद करने का हुक्म दिया और सोने चले गए। हॉलवेल उस घटना को याद करते हुए एक लेख में लिखा कि वह कोठरी 18 फीट गुणा 14 फीट की थी तथा उस कोठरी में कुल 146 अंग्रेजों को जबरदस्ती ठूँस दिया गया था।

गौरतलब बात है कि वह जून का महीना था और भीषण गर्मी पड़ी थी। ऐसे में इतनी तंग कोठरी में 146 लोगों को दिक्कत आने लगी। कुछ घंटे के बाद उन्हें सांस लेने में भी असुविधा होने लगी उस काल कोठरी में छोटी-छोटी खिड़कियां थी। उन खिड़कियों के पास थोड़ी हवा पाने के लिए वे एक दूसरे को कुचलने लगे। उन्हें न खाना दिया गया था, न ही पीने को पानी। भूख और प्यास के मारे उनकी हालत और बिगड़ने लगी। वे कोठरी में चीखने चिल्लाने लगे। चूँकि नवाब सिराजुद्दौला तब सो रहे थे इसलिए उनके किसी अधिकारी को साहस नहीं हुआ कि उन्हें जगाकर कैदियों का हाल बताएं।साथ ही नवाब की अनुमति के बिना उन्हें कोठरी से बाहर निकालने या उनकी किसी प्रकार मदद करने की हिम्मत किसी में नहीं थी । हालांकि, एक बूढ़े पहरेदार ने कोठरी के अंदर पानी देने की चेष्टा की थी पर इसका परिणाम बुरा ही निकला। पानी के लिए उनकी आपाधापी में कई लोग कुचल दिए गए। सुबह 6 बजे सिराजुद्दौला के जगने के बाद उन्हें कैदियों का हाल बताया गया। कोठरी खोलकर पाया गया कि कुल 146 कैदियों में केवल 23 कैदी ही मृतप्रायः जीवित थे।

जीवित बचे कैदियों की संख्या या मृत कैदियों की संख्या संबंधी तथ्य अंग्रेज अधिकारी हॉलवेल के द्वारा लिखे लेख से मिलता है। कई इतिहासकारों का मत है कि हॉलवेल ने कुल

कैदियों एवं मृत कैदियों की संख्या को बढ़ा-चढ़ाकर लिखा है, ताकि भारतीय नवाब एवं राजाओं की छवि एक क्रूर तानाशाह के रूप में प्रस्तुत की जा सके। इतिहासकारों का विचार है कि सिराजुद्दौला ने अंग्रेजों के साथ हुए युद्ध में मारे गए अंग्रेज सैनिकों को भी कालकोठरी में मृत सैनिकों की संख्या के साथ जोड़ दिया होगा।

यह एक व्यावहारिक प्रयोग द्वारा भी सिद्ध किया गया है कि 18 फीट गुणा 12 फीट क्षेत्रफल के कमरे में 146 लोगों को रखा जाना संभव नहीं है। प्रसिद्ध इतिहासकार विलियम डेलरिंपल अपनी किताब 'दि एनार्की' में कालकोठरी का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि उस कोठरी में 64 लोगों को रखा गया था, जिसमें 21 लोगों की जान बच गई थी।

इस घटना को अंग्रेजों ने अंग्रेजी राष्ट्रवाद के लिए खूब भुनाया। उन्होंने इस घटना को अंग्रेजों पर अत्याचार और ब्रितानी राष्ट्रीय गरिमा पर अपमानजनक प्रहार के रूप में पेश किया।

रॉबर्ट क्लाइव ने पुनः सिराजुद्दौला से कोलकाता को वापस ले लिया। सन 1757 में प्लासी की लड़ाई में सिराजुद्दौला को छल से हरा दिया। अंग्रेजों के इशारे पर ही सिराजुद्दौला के सेना नायक और उनके बेटे ने बेहद क्रूरता से सिराजुद्दौला का कत्ल कर दिया।

इस प्रकार भारत में ब्रिटिश उपनिवेश की नींव स्थापित हुई। सिराजुद्दौला ने काल कोठरी में मृत अंग्रेजों को फोर्ट विलियम के बाग में दफन करवा दिया था। बाद में हॉलवेल ने वहाँ मृतों की याद में एक स्मारक बनवाया। सन 1821 में फोर्ट विलियम के तत्कालीन गवर्नर जनरल फ्रांसिस हेस्टिंग्स ने उस स्मारक को फोर्ट विलियम से हटवा दिया, क्योंकि वह स्मारक बिजली गिरने से नष्ट हो गया था। सन 1914 में तत्कालीन वायसराय लॉर्ड कर्जन ने उस घटना में मृत लोगों की स्मृति में संगमरमर का एक स्मारक बनवाया। वह स्मारक डलहौजी स्क्वायर में अवस्थित था जो कि फोर्ट विलियम के समीप ही है। सन 1940 में उस स्मारक को हमारे कार्यालय, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) के भवन के समीप अवस्थित सेंट जॉन चर्च के प्रांगण में स्थापित किया गया और तब से वह स्मारक वहीं मौजूद है।

इतिहास की कुछ घटनाएँ इतिहास का रुख मोड़ देती हैं। इतिहास के एक अध्याय के समापन में अगले अध्याय के बीज मिल जाते हैं। प्लासी का युद्ध ऐसी ही एक घटना थी। क्या होता है यदि सिराजुद्दौला का सेनानायक मीर जाफर उसके साथ छल नहीं किया होता! क्या होता यदि सिराजुद्दौला प्लासी का युद्ध नहीं हारता! शायद तब भारत का इतिहास कुछ अलग ही होता।

चन्दन कुमार बढ़ई
हिंदी अधिकारी

पिता

उस शख्स का शुक्रिया लफ्जों में कहाँ हो पाता है,
जो शख्स खुद में पिता कहलाता है।
जेब उनकी खाली भले ही हो मगर,
वो हमें राजा महसूस कराता है,

हमारी एक जिद पर बाजार के सारे खिलौने खरीद लाता है,
जो खुद आधे पेट खाता है, हमें भर पेट खिलाता है,
उस शख्स का शुक्रिया लफ्जों में कहाँ हो पाता है,
जो शख्स खुद में पिता कहलाता है।

माँ हमें कोख में तो पिता अपने दिमाग में हमे पालता है,
हम जो आएँ ही नहीं हैं अभी इस दुनिया में,
उसके सुनहरे भविष्य के लिए पैसे बचाता है,
काम पर भी उसका मन कहाँ लग पाता है,

हमारे लिए क्या करना है, कैसे हमारे साथ खेलना है,
हर वक़्त बस यही सपने सजाता है,
उस शख्स का शुक्रिया लफ्जों में कहा हो पाता है,
जो शख्स खुद में पिता कहलाता है।

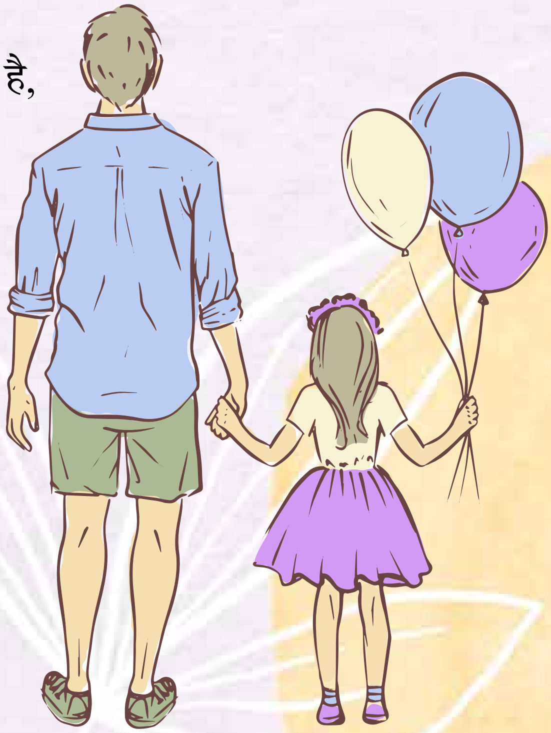

हम जब धीरे-धीरे बढ़ने लगते हैं,
अपने पिता के कंधे तक पहुँचने लगते हैं,
तब उनके किए हर काम बे-मायने लगने लगते हैं,
फिर भी वह शख्स हर परिस्थिति में मुस्कुराता है,
उस शख्स का शुक्रिया लफ्जों में कहा हो पाता है,
जो शख्स खुद में पिता कहलाता है।
जवानी में काम की जद्दोजहद हो या,
फिर बुढ़ापे में ज़िंदगी की जंग,
बच्चों के सामने वह हमेशा हिम्मत दिखाता है,
उस शख्स का शुक्रिया लफ्जों में कहा हो पाता है,
जो शख्स खुद में पिता कहलाता है।

मो. इमरान
एम.टी.एस

प्यार, नशा और हैवानियत

आज मुखिया जी के घर में बहुत चहल-पहल है, खुशियों का माहौल है। नौकर-चाकर सब अच्छी तरह घर की साज-सज्जा करने में लगे हैं और हों भी क्यों न, आज मुखिया जी के इकलौते बेटे रवि को देखने के लिए लड़की वाले आ रहे हैं। लड़की विधायक जी की इकलौती बेटी है। मुखिया जी बहुत प्रसन्न हैं। आज अगर बात पक्की हो गई तो राजनीति में और ऊपर उठने का अवसर प्राप्त हो जाएगा। इस रिश्ते के बारे में रवि बिल्कुल अनजान था। जैसा ही उसे पता चला वह दौड़कर मुखिया जी के पास गया और बोला " पिताजी, आप उनलोगों को मना कर दीजिए, मैं इस रिश्ते से खुश नहीं हूँ, मैं किसी और लड़की से प्रेम करता हूँ। मुखिया जी गुस्से से आग बबूला हो गए और पूछे, " कौन है वो लड़की? " रवि ने बताया कि वह अपने ही गाँव की लड़की "मनु" से प्रेम करता है और उसी से विवाह भी करना चाहता है। मुखिया जी यह सुनकर और भी ज्यादा गुस्सा हो गए और बोले कि तुम उस नीच जाति की लड़की मनु से विवाह करना चाहते हो जिसके पास ना रहने का ठिकाना है और ना ही दो वक़्त का खाना नसीब होता है। मुखिया जी ने रवि को चेतावनी देते हुए कहा कि यह बात गाँठ बांध लो कि तुम्हारा विवाह विधायक जी की बेटी के साथ ही होगा। वह अपने दो नौकरों को रवि के साथ रहने के लिए कहते हैं ताकि वह घर से बाहर न जा सके। विधायक जी कुछ लोगों के साथ आते हैं और रवि के साथ अपनी बेटी का रिश्ता पक्का कर देते हैं। पंडित जी को बुलाया जाता है। वे दोनों की कुंडलियों को मिलाते हैं और बताते हैं कि पाँच दिन बाद बहुत ही शुभ मुहूर्त है। दोनों परिवार बहुत ही खुश हो जाते हैं और तैयारियों में लग जाते हैं। जैसे ही यह बात रवि को पता चलती है वह बहुत ही दुखी हो जाता है और रोने लगता है। उसका मन मनु से मिलने के लिए व्याकुल हो रहा था। उसने अपने पिताजी से कहा कि वह एक बार मनु से मिलना चाहता है। वह बहुत गिड़गिड़ाता किन्तु उसके पिता नहीं

मानते हैं और उसे कमरे मे बंद कर देते हैं। रवि बाहर निकलने का बहुत प्रयास करता है परंतु वह बाहर निकलने में सफल नहीं हो पाता है।

आखिरकार आज वह दिन आ ही गया, आज उसकी शादी है। ढ़ोल-शहनाईयाँ बज रही हैं। पूरा घर सजा हुआ है। सभी लोग बहुत खुश हैं सिवाय रवि के। वह आज और भी ज्यादा बेचैन है कि वह मनु से कैसे मिले। परंतु आज उसे यह मौका मिल ही गया। वह दूल्हे के कपड़े में जैसे ही कमरे से बाहर निकला तो उसे कोई नहीं दिखा। वह दौड़ते हुए भागा और घर के पीछे के दरवाजे से निकलकर मनु के घर पहुँच गया। वह देखता है कि मनु की हालत बहुत खराब है। वैध्यजी उसका इलाज कर रहे थे परंतु कुछ सुधार नहीं हो रहा था। वह अंदर जाता है और मनु का हाथ पकड़ कर फूट-फूटकर रोने लगता है। वह कहता है "मनु तुम्हारी यह हालत मेरी वजह से ही हुई है न। मैं तुम्हारा अपराधी हूँ। मनु, उठो न ! मनु, उठो न ..." वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगता है। मनु की बंद पड़ी सांसें अब चलने लगती है जैसे उसे एक नया जीवन मिल गया हो। उसे होश आ जाता है। रवि बहुत खुश होता है और उसे गले लगा लेता है।

वहीं, उधर सभी लोग बहुत परेशान हो रहे हैं कि रवि कहाँ चला गया। घर का कोना-कोना छान लिया गया परंतु रवि नहीं मिला। गाँव के कुछ लोग मुखिया जी को बताते हैं कि वे उसे मनु के घर की तरफ जाते हुए देखें हैं। पूरा गाँव मनु के घर की तरफ चल पड़ता है। वहाँ पहुँचकर लोग देखते हैं कि रवि मनु का हाथ पकड़कर बैठा है। मुखिया जी अपने कुछ हथियारबंद लोगों के साथ घर के अंदर प्रवेश करते हैं और रवि को खींचकर बाहर निकालने लगते हैं। रवि चिल्लाने लगा "मैं नहीं जाऊँगा, मुझे यह विवाह नहीं करना, मैं मनु से प्रेम करता हूँ, मैं मनु के साथ ही विवाह करूँगा।" रवि एक व्यक्ति के हाथ से तलवार खींचता है और उससे अपने अँगूठे तो काटता है, जिससे खून बहने लगता है। वह दौड़कर जाता है और मनु की मांग को अपने खून भर देता है। यह देखकर मुखिया जी हक्के -बक्के हो जाते हैं। गाँव के सभी लोग देखते रह गए। कुछ देर बाद मुखिया जी चिल्लाते हुए बोले, "मैं इस शादी को नहीं मानता हूँ। रवि तुम चलो मेरे साथ।" अब रवि के साथ मनु के परिवार वाले भी थे। वे कहने लगे "रवि कहीं नहीं जाएगा, अब वह हमारा दामाद है। हम उसका किसी ओर के साथ विवाह किसी भी हालत में नहीं होने दे सकते।" मुखिया जी आग बबूला हो रहे थे उन्होनें तुरंत सरपंच को कहकर पंचायत बुलाया। पंचायत में रवि ने सबके सामने अपनी बात रखी। अतः पंचायत ने इस विवाह को वैध ठहराया। मुखिया जी ने भी सबके सामने यह कहा " आज से यह मेरे परिवार का सदस्य नहीं है और न ही मेरी संपत्ति पर इसका कोई अधिकार

है। मैं इसे अपने गाँव से बाहर निकालता हूँ। यह इस गाँव में नहीं रह सकता।" मुखिया जी की इस बात पर पंचों ने भी समर्थन किया और इस तरह से रवि और मनु को गाँव छोड़ना पड़ा। पास ही एक गाँव में रवि की बुआ रहती थी, वह उन्हीं के पास चला गया। रवि ने अपनी सारी आपबीती बुआ को बताई। बुआ कहती है "मेरी कोई संतान नहीं है, मैं तो अकेली ही रहती हूँ, तुमलोग कहाँ जाओगे? ऐसा करो तुमलोग यहीं रह जाओ, मेरे पास।" इस तरह से दोनों खुशीपूर्वक बुआ के साथ रहने लगते हैं। कुछ समय के बाद, मनु के पाँव भारी हो जाते हैं। रवि उसका अच्छे से ख्याल रखता है, उसकी हर जरूरतों को पूरा करता है। नौ महीने बाद मनु ने बहुत ही प्यारी-सी बच्ची को जन्म दिया। रवि बहुत खुश हो जाता है, वहीं उसकी बुआ दुखी थी क्योंकि एक बच्ची का जन्म हुआ था। बुआ को हमेशा यह बात खलती थी कि मनु के कारण उनका पूरा परिवार बिखर गया। इस कारण से मनु से वह हमेशा चिढ़ी हुई रहती थी। कुछ वर्षों के बाद मनु दुबारा माँ बनती है और फिर से एक लड़की को जन्म देती है। बुआ की नाराजगी और भी गहरा गई। वह रवि को कहती है, " देखो बेटा, इस लड़की को छोड़ दो, तुम दूसरी शादी कर लो, यह लड़की तुम्हारे लिए अच्छी नहीं है, इसे सिर्फ लड़की ही पैदा होगी। इससे हमारा वंश आगे नहीं बढ़ेगा।" रवि चुपचाप वहाँ से हट गया और मनु के पास जाकर अपनी बच्चियों के साथ खेलने लगता है। उस रात रवि को नींद नहीं आ रही थी। बार-बार बुआ की बातें उसके मन को झकझोर देती हैं। उसने सोचा कि बुआ को उसका परिवार बोझ लगने लगा। इसलिए रवि अब कुछ काम करने का सोचने लगता है। सुबह होते ही रवि काम की तलाश में निकल पड़ा। उसे कोई काम नहीं मिला। वह वापस घर लौटने लगा। तभी रास्ते में उसकी मुलाक़ात एक घर बनाने वाले ठेकेदार से हुई। रवि ने उससे काम के लिए पूछा। वह ठेकेदार ने उसे काम पर रख लिया और अगले दिन बुलाया। रवि बहुत खुश था कि उसे काम मिल गया। वह घर जाकर मनु ओर बुआ को बताता है। काम काफी मेहनत का था। रवि काफी थक जाता था। वहाँ पर काम करने वाले सब नशा करते थे। रवि को भी नशे की लत लग गई। इस तरह से रवि काम पर जाता शाम को नशे में धुत होकर घर आता था। बुआ मनु को दिनभर सताती, यातनाएँ देती, गाली-गलौज करती। मनु रवि को कुछ बता नहीं पाती क्योंकि वह रात में नशे में रहता था और सुबह जल्दी ही काम के लिए रवाना हो जाता था। मनु भीतर ही भीतर टूटती जा रही थी। मनु एक बार पुनः माँ बनने वाली है। बुआ ने मनु से कह दिया था कि अगर इस बार भी लड़की हुई तो उसे घर से निकाल देगी। मनु हमेशा डरी एवं सहमी सी रहने लगी। हमेशा भगवान से प्रार्थना करती कि इस बार उसे एक लड़का हो। भगवान ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और मनु को एक प्यारा सा ब्च्चा

हुआ। बुआ भी खुशी से पागल हो गई थी। उस लड़के का नाम अंश रखा गया। अंश हमेशा रोते रहता था। डॉक्टर ने बताया कि अंश के दिल में छेद है जिसके ऑपरेशन के लिए लाखों रुपये की जरूरत होगी। यह सुनकर पूरा परिवार सदमे में आ गया। रवि ने पैसे जुटाने में बहुत कोशिश की परंतु तब तक देर हो चुकी थी। अगली सुबह सभी जग गए पर अंश सोता रह गया। मनु की जैसे सांसें अटक गई, वह पत्थर की तरह कठोर हो गई। उसे सदमा लग गया। पूरे घर में मातम सा छा गया। जब अंश को ले जाया जा रहा था तब मनु ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। थोड़े दिनों के बाद वह पागल हो गई। दूसरों के बच्चों को उठा लेती। जो भी बच्चा नहीं उठाने देता तो उसे पत्थर फेंक कर मारा करती थी। सभी गाँव वाले ने मिलकर उसे पागलखाने भेज दिया। वहाँ उसकी मनोदशा थोड़ी ठीक होने लगी। रवि जब भी मिलने जाता तो मनु खुश हो जाती थी। मनु ठीक होकर घर आ जाती है। समय बीतते गए, मनु एक बार फिर एक बच्चे को जन्म देती है। रवि अब पहले जैसा नहीं रहा। नशा ही उसके लिए सब कुछ था। एक व्यापारी जिसकी कोई संतान नहीं थी, उसने रवि से कहा, “ तुम्हारी पत्नी तो पागलखाने से आई है बुआ भी बूढ़ी हो गई है। तुम अपने बच्चे को कैसे पालोगे? एक काम करो मैं तुम्हें 5000 रूपये देता हूँ, तुम यह बच्चा मुझे दे दो।“ रवि ने पैसे की लालच में आकार बच्चे को बेच देता है। मनु जब भी अपने बच्चे को ढूंढती तब रवि उसे नींद की गोली दे दिया करता था। नशे ने रवि को खा गया था। उसका जमीर मर चुका था। नशे के लिए कुछ भी करने को तैयार था। उसने नशे के लिए अपनी बेटियों को भी बेच दिया था। बुआ ने एक बार रवि से कि इस पागल को भी बेच दो। अपने बच्चों से मुलाकात करने के नाम पर मनु तैयार होकर रवि के साथ स्टेशन पहुँचती है। रवि उसे ट्रेन में बैठाकर खुद बाहर यह कहकर उतरता है कि वह पानी का बोतल लाने जा रहा है। इसी बीच ट्रेन चलने लगती है और मनु खिड़की से हाथ बाहर निकालकर रवि,रवि चिल्लाने लगती है। पता नहीं मनु कहाँ होगी? किस हाल में होगी?

अलिषा मौर्या

एम.टी.एस.

हिंदी पखवाड़ा-2021 की कुछ झलकियाँ ।

पल

पल ऐसा पल जो पल में जाए बदल,
उस पल में कुछ करने की कर तू पहल।

बस सोचकर न गुजार यूँ दिन,
मंजिल कर तू पक्की, बढ़ा तू कदम।

कर अच्छे काम तू बना अपना नाम
इस पल की महत्ता पहचान, बन तू महान।

सपने पूरे करने हेतु बस वक़्त की तलाश न कर,
यह वक़्त सबका है इस पर विश्वास कर।

इस काल की गति को बस तू ही मोड़ सकता है,
नादानी छोड़ समझदारी से यदि सब के संग तू चल सकता है।

सुमित कुमार वर्णवाल
एम.टी.एस.

ऑनलाइन शिक्षा

किसी भी राष्ट्र के विकास में उस देश की शिक्षा-व्यवस्था का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षा-व्यवस्था किसी भी देश का विकास का आधार होता है। अगर हम विश्व के विकसित एवं शक्तिशाली राष्ट्रों को देखें, तो यह बात स्पष्ट है कि इन राष्ट्रों को विकसित, सम्पन्न और शक्तिशाली बनाने में उस देश की उत्तम शिक्षा-व्यवस्था का महत्वपूर्ण योगदान है।

शिक्षा-व्यवस्था के क्षेत्र में हमारे भारत का इतिहास बहुत ही गौरवशाली रहा है। यहाँ नालन्दा, तक्षशिला, विक्रमशिला जैसे अनेक विश्वविख्यात विश्वविद्यालय थे, जहाँ विश्वभर के अनेक देशों से लोग शिक्षा ग्रहण करने हेतु आते थे। परन्तु वर्तमान में विश्व के सर्वश्रेष्ठ पच्चास शिक्षण संस्थानों में हमारे देश का एक भी शिक्षण संस्थान नहीं है। इससे हमारे भारत देश की कमजोर शिक्षा-व्यवस्था का पता चलता है।

वर्तमान वैश्वीकरण के समय में हर क्षेत्र में तीव्रता से परिवर्तन हो रहे हैं। अत: स्वाभाविक है कि इन परिवर्तनों के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी परिवर्तन बहुत ही आवश्यक हो जाता है। शिक्षा व्यवस्था वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप होने के लिए शिक्षण व्यवस्था में नवीकरण की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो जाती है। शिक्षण विधियाँ निरंतर परिमार्जित होती रही हैं। सिर्फ स्मार्ट बोर्ड ने ही ब्लैक बोर्ड को प्रतिस्थापित नहीं किया है, बल्कि शिक्षक का स्थान भी मोबाइल अथवा कंप्यूटर की स्क्रीन लेती जा रही है और शिक्षक की भूमिका पर्दे के पीछे से सेवा प्रदाता की होती जा रही है।

शिक्षा-व्यवस्था में ये नवीकरण के प्रयोग ऑनलाइन जैसे शिक्षण माध्यमों को आवश्यक बना दिया है। इसलिए शोध, अनुसंधान-तकनीक एवं विज्ञान के क्षेत्र में हमारे देश को अगर आगे बढ़कर विशेष उपलब्धि हासिल करनी है और अपनी शिक्षा संस्थानों को विश्व में अग्रणी स्थान पर ले जाना है, तो शिक्षा के क्षेत्र में विशेष नवीकरण के प्रयोग एवं ऑनलाइन शिक्षा को हमें अधिक-से-अधिक बढ़ावा देना होगा।

वर्तमान में कोविड-19 वैश्विक महामारी के

कारण लॉकडाउन से भारत सहित सारे विश्व की शिक्षा-प्रणाली प्रभावित हुई है। मार्च 2020 से भारत एवं अन्य अनेक देशों में प्राय: सभी शिक्षण संस्थान बंद रहे, जिससे शिक्षा व्यवस्था पर बहुत गहरा असर पड़ा है। वर्तमान स्थिति में शिक्षा व्यवस्था पूरी तरह से नवीन सूचना तकनीकी के उपयोग द्वारा ई-लर्निंग एवं ऑनलाइन माध्यम पर निर्भर होकर रह गई है। कोरोना संकट ने शिक्षा व्यवस्था में ऑनलाइन माध्यमों के महत्व को पूरी तरह से उजागर किया है। ऑनलाइन शिक्षण के द्वारा सुदूर ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों एवं विद्वान शिक्षकों के बीच की दूरियाँ कम हुई है तथा शिक्षा तक उनकी पहुँच भी आसान हुई है। ई-लर्निंग एवं ऑनलाइन शिक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों के लिए लॉकडाउन जैसी परिस्थितियों में भी अपना अध्ययन अनवरत रूप से जारी रखना संभव हुआ है।

ऑनलाइन शिक्षण को प्रभावी बनाने और विद्यार्थियों के लिए बेहतर परिणाम प्राप्त करने, शिक्षण को रोचक बनाने, अध्ययन में अभिरुचि बनाए रखने और उपलब्ध समय के साथ अध्ययन का सामंजस्य बनाए रखने की दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी एवं सहायक होता है। शिक्षण में ऑनलाइन शिक्षण के द्वारा बेहतर परिणाम की सम्भावनाओं को देखते हुए भारत में भी शिक्षा के क्षेत्र में ई-लर्निंग एवं ऑनलाइन कक्षाओं को बढ़ावा मिल रहा है।

एक अनुमान लगाया गया था कि वर्ष 2016 में भारत में ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने वाले लगभग सोलह लाख उपयोगकर्ता थे, जिसके वर्ष 2021 में छयानब्बे लाख उपयोगकर्ता हो जाने की सम्भावनाएं व्यक्त की गई थीं, लेकिन वर्तमान कोविड-19 के दौर में जिस तीव्रता से ऑनलाइन शिक्षण की आवश्यकता पड़ी है, उससे इस बात की पूरी सम्भावना है कि निश्चय ही यह अनुमान समय से पहले ही पूरा हो जाएगा। सीखने में आसानी, लचीलेपन और अध्ययन सामग्री की विस्तृत श्रृंखला ने भी भारत में ऑनलाइन शिक्षा बाजार के समग्र विकास को प्रभावित किया है।

ई-लर्निंग, ऑनलाइन लर्निंग और सूचना तकनीक के अधिक से अधिक इस्तेमाल को बढ़ावा देने के लिए सरकार भी प्रतिबद्ध दिखाई देती है। स्वयं (SWAYAM) पोर्टल जहाँ छब्बिस लाख शिक्षार्थियों के अलावा 574 पाठ्यक्रम पहले से ही नामांकित हैं, वर्तमान समय में तेजी से लोकप्रिय हुआ है। स्वयंप्रभा (SWAYAMPRABHA) समूह के डीटीएच टीवी चैनलों को लोगों द्वारा देखा जा रहा है। राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी, जिसे लॉकडाउन से पूर्व तक बाइस हजार लोग प्रतिदिन देख रहे थे लॉकडाउन अवधि में प्रतिदिन 1,60,000 बार देखा गया। ऑनलाइन क्लास रूम, जूम मीटिंग एप, गो टू मीट, हैंग आउट, स्काइप, गूगलमीट जैसे प्लेटफॉर्म ऑनलाइन अवधि में तेजी से प्रयोग

में आने लगे हैं। मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा तैयार किए गए ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म जैसे स्वयं, दीक्षा, ई-बस्ता, नेशनल रिपॉजिटरी ऑफ ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज, शोध गंगा, विद्वान, ई-पीजी पाठशाला, एमओओसी (Massive Open Online Courses) आदि इस कोरोना काल में अत्यन्त उपयोगी साबित हुए हैं तथा इनके प्रयोग में भी लगातार वृद्धि के साथ-साथ विद्यार्थियों का ई-लर्निंग, ऑनलाइन लर्निंग, एजुकेशनल पोर्टल, डिजिटल लाइब्रेरी आदि के प्रति जिज्ञासा, लगाव और प्रयोग तेजी से बढ़ा है। भारत में ऑनलाइन शिक्षा के बाजार की सम्भावनाओं को देखते हुए ही Byju’s, Doubtnut, Up-Grad, Test Book, Toppr, Unacademy, Vedantu जैसी बड़ी कम्पनियों भारतीय ऑनलाइन शिक्षा के बाजार में न सिर्फ कूद पड़ी हैं, बल्कि दिनों दिन सफल भी हो रही है।

विद्यार्थियों की इंटरनेट और ऑनलाइन माध्यमों के जरिए विस्तृत पाठ्य सामग्री तक पहुँच आसान हुई है। जोकि परम्परागत पाठय-सामग्री की तुलना में अधिक सस्ती, सुगम एवं सुग्राह्य होने के साथ-साथ रोचक होती है, क्योंकि एक ही प्रकार के माध्यम से अध्ययन करने पर छात्रों में अध्ययन के प्रति रुचि कम होती जाती है, जबकि विभिन्न साधन माध्यमों एवं विभिन्न प्रकार की अध्ययन सामग्री तथा विभिन्न शिक्षण अधिगमों का प्रयोग करने से अध्ययन में रुचि बनी रहती है। केवल सुनने की बजाय देखने-सुनने वाले साधनों का विद्यार्थियों पर ज्यादा गहरा प्रभाव होता है। नवीन तकनीक विद्यार्थियों को दृश्य-श्रव्य तकनीक उपलब्ध कराकर अध्ययन में उनकी रुचि को बढ़ावा देती है और उनका वास्तविकता का अधिक नजदीक से परिचय कराती है, जिससे वे विभिन्न विषयों को भली-भाँति समझने में सक्षम होते हैं। भारत जैसे विशाल देश में बहुत बड़ी आबादी सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है, भारत में अभी भी कई क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ पर्याप्त संख्या में स्कूल और कॉलेज उपलब्ध नहीं हैं और यदि हैं भी तो बुनियादी आधारभूत सुविधाओं के साथ पर्याप्त मात्रा में समुचित लाइब्रेरी और योग्य शिक्षकों आदि का अक्सर अभाव रहता है। ऐसे में आधुनिक सूचना-तकनीक, ऑनलाइन शिक्षा तथा विभिन्न एजुकेशनल लर्निंग पोर्टल, शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने की दृष्टि से मील का पत्थर साबित हो रहे हैं। ऑनलाइन शिक्षा की ऐसी अनेक अच्छाइयाँ हैं, जिसके कारण ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा दिया जाना चाहिए -

(क) छात्र अपनी योग्यता एवं सामर्थ्य के अनुसार धीमी अथवा तीव्र गति से सीख सकते हैं। सीखने में आसानी, लचीलापन और विस्तृत तथा रोचक अध्ययन सामग्री भी छात्रों को ऑनलाइन शिक्षा के प्रति आकर्षित करती है।

(ख) ऐसे छात्र भी अपना अध्ययन जारी रख पाते हैं, जिन्हें अध्ययन के अलावा अन्य कार्यों

के लिए भी समय देना पड़ता है। ऑनलाइन शिक्षा की वजह से सुदूर ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों को अध्ययन और विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए अपना गाँव छोड़कर महानगरों की ओर भागने की आवश्यकता नहीं रह गई है।

(ग) ऑनलाइन शिक्षा के अन्तर्गत, शिक्षक और शिक्षार्थी की पहुँच का विस्तार होता है, जहाँ विद्यार्थियों को कुशल एवं योग्य शिक्षकों के स्तरीय व्याख्यान, आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं, वहीं शिक्षकों की छात्रों की बड़ी संख्या तक पहुँच आसान हो जाती है।

(घ) ऑनलाइन शिक्षा में समय का लचीलापन रहता है और विद्यार्थी अपनी सुविधानुसार समय का उपयोग कर सकते हैं।

चुनौतियाँ

ऑनलाइन शिक्षा के लिए नेटवर्क, बिजली और डिवाइस की उपलब्धता अनिवार्य होती है। भारत की आबादी का एक बड़ा भाग ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है, जिसकी सीमित आय है और उसके लिए ऑनलाइन शिक्षण के लिए डिवाइस की व्यवस्था करना आसान नहीं है। ग्रामीण क्षेत्रों में नेटवर्क एवं बिजली की पर्याप्त एवं उचित उपलब्धता न होना अभी भी ऑनलाइन शिक्षा की राह में बड़ी समस्या है। इंटरनेट और मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया की एक रिपोर्ट के अनुसार, वित्तीय वर्ष 2019 के अन्त तक भारत 451 करोड़ मासिक सक्रिय इंटरनेट उपयोगकर्ताओं के साथ चीन के बाद दूसरा स्थान रखता है, लेकिन इसके बावजूद भी अभी तक भारत में केवल 30% लोगों तक ही इंटरनेट की उपलब्धता हो पाई है। शिक्षा पर नेशनल सैंपल सर्वे की रिपोर्ट बताती है कि 2017-18 तक 5 से 24 वर्ष की उम्र के सदस्यों वाले सभी घरों में से केवल 8% के पास ही कम्प्यूटर और इंटरनेट कनेक्शन है। नीति आयोग की 2018 की रिपोर्ट कहती है कि भारत के 55,000 गाँवों में मोबाइल नेटवर्क कवरेज नहीं था।

पारम्परिक शिक्षा न सिर्फ विद्यार्थियों का ज्ञानार्जन एवं जानकारी प्रदान करती है, बल्कि पारम्परिक कक्षीय पद्धति में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का भी अवसर उपलब्ध होता है, जोकि ऑनलाइन शिक्षा में सम्भव नहीं होता है।

घरेलू माहौल में ऑनलाइन शिक्षण/अध्ययन के दौरान विद्यार्थियों और शिक्षकों की एकाग्रता प्रभावित होती है। सीमित आय के घरों में अक्सर विद्यार्थियों के लिए बाधा मुक्त एवं शान्त वातावरण उपलब्ध होना मुश्किल होता है।

स्क्रीन पर अधिक समय बिताने के कारण आँखों और स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं उत्पन्न होने की आशंकाएं सदैव बनी रहती हैं।

परम्परागत शिक्षण की भाँति शिक्षक छात्रों की मनोदशा, उनके भावों, उनकी एकाग्रता और

अध्ययन में उनकी रुचि का अवलोकन और आकलन नहीं कर पाते हैं।

इंटरनेटयुक्त डिवाइस उपलब्ध होने के कारण युवावस्था में तकनीकी के दुरुप्रयोग से उनके भटकने की आशंकाएं बनी रहती हैं।

ऑनलाइन शिक्षा प्रदान करने के लिए जिस आधारभूत संरचना एवं सुविधाओं की आवश्यकता होती है, वे अभी शिक्षण संस्थाओं में उपलब्ध नहीं हैं।

परम्परागत शिक्षण के अभ्यस्त शिक्षकों को ऑनलाइन शिक्षण करने के लिए अकस्मात् तैयार होने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है, जिसके लिए पर्याप्त प्रशिक्षण का तन्त्र विकसित नहीं है।

अतः इसमें सन्देह नहीं है कि नवीन सूचना तकनीक एवं ऑनलाइन तथा ई लर्निंग शिक्षा व्यवस्था हेतु एक वरदान की तरह वहीं दूसरी तरफ परम्परागत ऑनलाइन शिक्षा का अपना महत्व है। इसलिए शिक्षा व्यवस्था को न तो पूरी तरह ऑनलाइन शिक्षा पर केन्द्रित किया जा सकता है और न ही केवल पारम्परिक शिक्षा के सहारे रहा जा सकता है, बल्कि बेहतर परिणाम ऑनलाइन शिक्षा तथा पारम्परिक शिक्षा, दोनों के सम्मिश्रण से ही प्राप्त किए जा सकते हैं।

बदले हुए वर्तमान परिदृश्य में शिक्षकों की भूमिका अपने ज्ञान को सिर्फ विषय तक ही सीमित रखने की नहीं रह गई है, बल्कि कम्प्यूटर एवं आधुनिक सूचना तकनीक के प्रयोग में पारंगत होने की भी है, तभी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के साथ कदम मिलाकर चल सकते हैं और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अपनी प्रासंगिकता सिद्ध कर सकते हैं। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि पारम्परिक शिक्षण को प्रभावी बनाने के साथ-साथ तकनीक के प्रयोग, ई-लर्निंग, ऑनलाइन लर्निंग, शैक्षिक पोर्टल जैसे उपायों को तेजी से बढ़ावा देने के लिए भी गम्भीरता से प्रयास करने होंगे और इस हेतु पारम्परिक शिक्षण और आधुनिक शिक्षण के लिए आधारभूत सुविधाएं, संरचना और प्रशिक्षण आदि पर ध्यान केन्द्रित करना होगा तथा शिक्षा पर बजट बढ़ाना होगा, क्योंकि शिक्षा पर किया जाने वाला व्यय निवेश की तरह होता है, जिसका प्रतिफल भविष्य में अवश्य प्राप्त होता है, जिससे सम्पूर्ण समाज लाभान्वित होता है और राष्ट्र उत्तरोत्तर प्रगति की ओर अग्रसर होता है।

जितेंद्र शर्मा
सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ)

मन

घूमता है मन, झूमता है मन,
दबी-दबी जुबान में कभी-कभी
बहुत ही कुछ कहता है मन।
उछलता-कूदता, भटकता सा मन
महफिलों की रंगीनियों में रहकर
खामोश भी कभी हो उठता है मन।

किसी मुखड़े की उदासी के लिए
किसी होठों की खामोशी के लिए
कभी-बनती-बिगड़ती कहानी के लिए
तो किन्ही आँखों के पानी के लिए
बेबसी में आहें भी बेपनाह
भरता है मन।

वो चुभती तन्हाईयाँ,
किसी की बेदर्दी रुसवाईयाँ
उन रक्तसने घावों को
नमकीन पानी से धुली बिवाईयों को
हँसते अधरों के पीछे भी
कभी छुप जाता है मन।

वर्षों बाद लगते मेलों की टोली में,
आते-जाते रंगीन मुसाफिरों
की हमजोली में
पर्दों के पीछे से ताकता-झाँकता
इंतजार किसी का करता है मन।

चोट खाता, घाव लेता
आहें तड़प के भरता है मन
नासूर बन चुके झख्मों को
बाहर झाँकने से बचाता
हौले से अंदर ही अंदर
परवाह भी करता है मन।

सावन की असीमित बूंदों ने तो कभी
प्यासी-तरसती- तप्ति धरती में
जीवन के हर पहलु में
मृग बन, कस्तुरी सा कुछ
ढूँढता है मन।
अधजले गुलाबी डायरी के पन्ने को
पंखुड़ियाँ विहीन गुलाबों की टहनियों को
सुनहरे सन्दूक के कोने में
परत दर परत सँजोता है मन।
सुनी-अनसुनी, कुछ समझी कुछ नासमझी
कुछ झूठी- कुछ सच्ची
ढेरों किस्सों-कहानियों को
डायरी के पन्नों पर बिखराता है मन।

कभी अकेलेपन में फुरसत से बैठ
आवाज सुनो मन की
बहुत सी बातें कहता है मन
घूमता है मन, झूमता है मन
दबी-दबी जुबान में, सुनो न
बहुत ही कुछ कहता है मन।

आरती शर्मा
एम.टी.एस.

संघर्ष

यह कहानी है एक किसान रामलाल और उसकी बेटी मुनिया की। इस कहानी में एक पिता के संघर्ष को दर्शाया गया है कि उसने अकेले बिन माँ की बच्ची की परवरिश की तथा उसकी शिक्षा-दीक्षा कारवाई। रामलाल एक छोटे से गाँव में जो शहर से काफी दूर था वहाँ रहता था। उसे साईकल से बस स्टैंड जाने में दो घंटे लगते थे। तब जाकर वह शहर जाने वाली बस पकड़ पाता था। गाँव से शहर आने-जाने के लिए दिन में दो ही बस चलती थी। वह खेती करता था और सब्जियों को ले जाकर शहर में बेचता था। उससे जो आमदनी होती उससे उसका घर-बार चलता था। वह अपनी बेटी से बहुत प्यार करता था। जब मुनिया तीन साल की थी तभी उसकी माँ बीमार पड़ गई तथा शहर ले जाने की असुविधा और पैसो की कमी के कारण उसकी मौत हो गई थी। तब से मुनिया की सारी ज़िम्मेदारी उसके पिता रामलाल पर ही आ गई। इस तरह से वह अपनी बेटी तथा घर की जिम्मेदारी उठाने लगा। इसमें उसे काफी तकलीफ़ों का सामना करना पड़ता था। कई लोगों ने उसे दूसरी शादी करने के लिए भी बहुत बार कहा पर वह यही सोचता कि दूसरी माँ आएगी तो मुनिया के साथ सौतेला व्यवहार करेगी। इसलिए उसने दूसरी शादी के लिए सोचा भी नहीं।

जब रामलाल खेतों पर काम करने के लिए जाता तो वह अपनी बेटी को भी साथ ले जाता था। धीरे-धीरे समय बीतता गया। अब मुनिया स्कूल में पढ़ने लगी। मुनिया गाँव के प्राथमिक स्कूल में पढ़ने जाती थी। रामलाल अपनी बेटी को बड़ा ऑफिसर बनाना चाहता था लेकिन उसे अपनी किस्मत और गरीबी पर बहुत अफसोस होता था। मुनिया भी अब अपने पापा के छोटे-मोटे कामों में हाथ बटाने लगी थी। पूरे गाँव में वह अकेली लड़की थी जो पढ़ने जाती थी तथा लड़कों के साथ बैठकर पढ़ाई किया करती थी। कभी-कभी लड़कों के साथ कक्षा में बैठकर पढ़ना उसे खराब लगता था लेकिन अपने पापा का ख्याल आते ही वह पढ़ने पर ध्यान देने लगती थी। इस तरह वह अपने स्कूल में प्रथम श्रेणी से पास

कर गई। वह स्कूल 9वीं क्लास तक ही था। आगे की पढ़ाई के लिए उसे शहर के स्कूल और कॉलेज में पढ़ना होगा। परंतु वह अपने पापा की परिस्थिति को अच्छे से जानती थी। वह पढ़ने में बहुत तेज थी। उसने गाँव के छोटे-छोटे बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने लगी। जिससे कुछ पैसे भी आने लगे। उसने ट्यूशन के पैसों से शहर के स्कूल का फॉर्म भरा। वह अपने फीस को लेकर चिंतित थी। इसी दौरान वह एक दिन अपने पापा के साथ सब्जी बेचने शहर आई थी। तभी उसकी दुकान पर सब्जी लेने एक शिक्षक आएँ। मुनिया ही सब्जी का हिसाब -किताब कर रही थी। उसकी तीव्र गणना तथा होशियारी को देख शिक्षक दंग रह गए। उस शिक्षक ने मुनिया की पढ़ाई-लिखाई के बारे में रामलाल से पूछा। रामलाल ने अपनी बेटी के बारे में सभी बातें बता दी। वह शिक्षक बहुत दयालु तथा मदद करने वाले प्रवृति के थे। उन्होनें मुनिया को अपने स्कूल में दाखिला दिलवाने के लिए उससे फॉर्म भरवाया। शिक्षक का स्कूल 12वीं कक्षा तक था। उन्होनें उस स्कूल में मिलने वाली स्कॉलरशिप संबन्धित फॉर्म भी मुनिया से भरवाया। मुनिया को स्कॉलरशिप मिल गया तथा वह मन लगाकर पढ़ाई करने लगी। वह अपने पिता के साथ शहर आती थी। रामलाल बाजार में सब्जी बेचने चला जाता था। शाम मे वह मुनिया के साथ वापस गाँव लौट जाता था।

एक दिन मुनिया के स्कूल में एक आई.पी. एस. अधिकारी आई। उनका स्वभाव एवं रुतबा देखकर मुनिया पर बहुत प्रभाव पड़ा। उसने भी मन ही मन अब ठान लिया कि वह भी बड़ी होकर एक आई.पी.एस. अधिकारी बनेगी। उस दिन मुनिया ने उस आई.पी.एस. अधिकारी से ढेरों सवाल किए थे। उस आई.पी.एस. अधिकारी ने मुनिया के सारे प्रश्नों के उत्तर दिये जो आई.पी.एस. अधिकारी बनने से संबन्धित थे। इस प्रकार मुनिया 12वीं पास कर गई। वह अपने स्कूल की टॉपर थी। रामलाल की खुशी का ठिकाना नहीं था। मुनिया ने उस शिक्षक को शुक्रिया कहा जिसने उसे स्कूल में दाखिला करवाने में मदद की थी। अभी तक मुनिया का जीवन अच्छा चल रहा था। लेकिन एक दिन अचानक उसके पिता की तबीयत बहुत ज्यादा खराब हो गई। उन्हें आनन-फानन में अस्पताल में भर्ती करवाया गया। रामलाल के इलाज में ढेरों रुपये की जरूरत थी। पैसे के अभाव में रामलाल की मृत्यु हो जाती है। मरते समय रामलाल ने मुनिया को हिम्मत न हारने की नसीहत दी तथा उसे एक अधिकारी बनने की बात कही। उस दिन मुनिया बहुत रोई थी। किसी तरह उसने अपने आप को संभाला। अब मुनिया

बिल्कुल अकेली हो गई थी। इस विकट परिस्थिति से निकलकर उसने शहर में ही एक हॉस्टल में रहने का फैसला किया तथा शहर के कॉलेज में दाखिला लिया। वह एक प्राइवेट स्कूल में पढ़ाकर अपनी कॉलेज तथा हॉस्टल का खर्च उठाती थी। वह पुस्तकालय से पुस्तक लेकर पढ़ने लगी। वह दिन-रात पढ़ाई में ही लिन रहती थी। वह पुराने मैगज़ीन आधे दाम में खरीद कर पढ़ा करती थी। इस बीच उसे अपने पिता की भी बहुत याद आती थी। एक असहाय बिना माता-पिता की लड़की जिस पर किसी का हाथ ना हो उसकी स्थिति को समझना बहुत ही मुश्किल है। कॉलेज खत्म करने के बाद उसने प्रतियोगिता परीक्षा देनी शुरू की। शुरुआत में ही उसे एक बैंक में क्लर्क के पद पर नौकरी मिल गई। परंतु वह इस उपलब्धि से खुश नहीं थी। उसे बार बार अपने पिता को दिये वचन याद आता था। उसे एक अधिकारी बनना था। वह दिन में बैंक में काम करती तथा रात में पढ़ाई करती। इस प्रकार उसने सफलता प्राप्त की और एक आई.पी.एस. अधिकारी बन गई। वह अपने पिता को दिये वचन को पूरा की। इस खुशी के अवसर पर उसने अपने पापा को याद किया। वह उसके रोलमॉडल थे। विकट परिस्थितियों में भी उसने मुनिया को हार मानने न दिया। एक गाँव की बेटी कम संसाधनों के बाद भी सफल होकर समाज में एक उदाहरण प्रस्तुत किया है।

आज भी हमारे समाज में लड़कियों को बोझ समझा जाता है। भले ही लड़कियों को गर्भ में मारने संबंधी कानून बनाया गया है परंतु इसका चलन आज भी समाज से पूरी तरह से खत्म नहीं हुआ है। कभी दहेज प्रथा तो कभी स्वतंत्रता तो कभी लिंग भेद का सामना आज भी बेटियों को करना पड़ता है। नारी समाज के प्रति भेद-भाव की मानसिकता को पूरी तरह से बदलने की जरूरत है। यह कहानी रामलाल और उसकी बेटी मुनिया की मात्र नहीं है। यह उस हर पिता की कहानी है जो अपनी बेटी में पुत्र को देखता है। कठिन परिस्थितियों के बाद भी उसे सफल बनाता है। यह कहानी उस नारी की है जो स्वयं विचलित न होकर अपने कर्म पथ पर चलते रहती है। मुनिया उस हर हर लड़की के लिए प्रेरणा पात्र है जो हर कठिनाइयों से लड़कर सफलता प्राप्त की। अगर उसने हिम्मत न दिखाई होती तो इस समाज की दक़ियानूसी विचारधारा से ग्रसित होकर टूट जाती। मुनिया अपने पिता के सपनों पर खरी उतरी भले ही उस सपने को अपने आँखों से साकार होते हुए रामलाल नहीं देख पाया लेकिन उसने अपनी बेटी को इस समाज में रहने लड़ने तथा उड़ान भरने के लिए पंख द दिया था।

सूरज किशोर
डी.ई.ओ.

मेरा गाँव

मेरा गाँव जितना सुंदर कोई गाँव न होगा
कोई नहीं है इसका मोल कोई भाव न होगा
ताल-तलैया, बाग-बगीचे, पोखर खेत खलिहान है
कहीं सुनाता मंत्र और घंटी और कहीं अजान है
सुंदर सलोने बच्चे करते हैं अठखेलियाँ
जहां सुनाते अक्सर बूढ़े कहानी और पहेलियाँ
शहद से मीठी बोली सबकी, कहीं ऐसा स्वभाव न होगा।
शीतल मंद सुगंधित पवन बहे, जब चले पूर्वईया
झूम-झाम के नाचें गायें, भाभी-ननद अंगनईया
गुंजन करते भवरें तितली, बागों और फुलवारी में
तरह-तरह के फसल लगे हैं, खेतों और क्यारी में
हरियाली बिखरी है इतनी, जैसा सावन न होगा
मेरा गाँव जितना सुंदर कोई गाँव न होगा।
सुंदर बाग-बगीचे के फल और फूलों के उपवन है
महुआ,बेर, बेल, नीम सभी, आम का कानन है
चहुओर सम्पदा भरी पड़ी है इस पावन धरणी में
उठा सको तो खूब उठा लो, गर ताकत हो करणी में
नागवार लगे गर बात मेरी, सजा देना अन्याय न होगा
मेरा गाँव जितना सुंदर कोई गाँव न होगा।
मिलना जुलना प्यार से रहना ही इसकी पहचान है
दुर्गापुजा, दंगल, मेला, रामलीला ही शान है ,

कॉलेज, बैंक तथा बाजार है विकसित गाँव है मेरा
सभी जातियाँ रहते मिलजुल कर न तेरा न मेरा
चिड़ियाँ चहके मधुर राग में, दूसरा ऐसा गाँव न होगा।
मिलनसार हैं सब नवयुवक, नहीं किसी से बैर है
हाँ, गर कोई करे अभद्र तब उसका कोई न खैर है
कोर्ट, कचहरी, थाना-पुलिस, ये सब सपने की बातें
झगड़ा फसाद सब मिलजुल कर आपस में ही सुलझाते
सदा बने रहें जब ऐसे, फिर कोई टकराव न होगा
मेरा गाँव जितना सुंदर कोई गाँव न होगा।
नर नारी और जीव पशु पक्षी, सब मस्ती में रहते हैं
पुत्र पिता की अनुज अग्रज की, बात न टाला करते हैं
पावन धरती के नेक जन, सम्मान के सब पात्र हैं
गाँव को प्राप्त है भगवान का आशीष, कभी यहाँ बिखराव न होगा
मेरा गाँव जितना सुंदर कोई गाँव न होगा।
डॉक्टर, शिक्षक, इंजीनियर सब हैं मेरे गाँव में
नई-नई उपलब्धि रोज, सफलता कदम चूमती
ईद, दशहरा, दिवाली, होली चाव से खूब मनाते हैं
होली के रंगों में रंगकर, फाग कबीरा गाते हैं
नाचें खुशी से, धरा और पवन का ठहराव न होगा
मेरा गाँव जितना सुंदर कोई गाँव न होगा।

राजेश कुमार-II
डी.ई.ओ.

पुरानी डायरी

जीवन की सरल चीजें ज्यादा स्थायी होती हैं। स्मृति की गैलरी में कभी-कभी छोटी सी सरल घटना आजीवन सुरक्षित रहती है, और शायद राजनीतिक-आर्थिक महत्व की कोई जटिल और बड़ी घटना को स्मृति-घर में एक कोना भी नहीं मिलता है।

सर्दियों में खिलने वाले पीले-नारंगी गेंदा फूल को न जाने क्यों मैं एकटक निहारती रहती हूँ। मानों मैं गेंदा फूल की एक-एक पंखुड़ी को करीने से गिन रही हूँ। पंखुड़ियों की वर्त्तिकाओं के सम्मोहन में मैं पलकें झपकाना भूल जाती हूँ। सुबह के ताजे ओस कणों से भींगे गेंदा की नरमी और उसके भारीपन को महसूस करती हूँ। सर्दी के दोपहर की चटकीली धूप में हल्की हवा के थपेड़ों से डोलते गेंदा के यौवन का स्पर्श महसूस कर सकती हूँ। शाम को जब बच्चे गलियों में अपने खेल को समेटकर घरों में बंद हो जाते हैं और एक नीम अँधेरी छाया झाड़ियों के झुरमुट से बाहर झांकती हैं। पश्चिम के दिशा में खड़े विशाल वृक्षों के पीछे जब सूरज डूबने लगता है, और चिड़ियाँ सिसकी-सी लेतीं अपने डैने फड़फड़ाती हैं। तब मैं क्यारी में छूट गए पीले-नारंगी गेंदा के उदास चेहरे को देखती हूँ। वह इस ठंडी रात के एकाकीपन को न जाने कैसे झेलेगा।

कोलकाता में अलीपुरद्वार सी ठंड नहीं पड़ती। अलीपुरद्वार के रेलवे क्वार्टर में मेरे बचपन के लगभग 4 वर्ष बीते हैं। उन बाल्य स्मृतियों को टटोलने पर न जाने क्यों अलीपुरद्वार की केवल सर्दी ही याद आती है। घने कुहासे की धुंध में लिपटी एक नम सुबह। चटक लाल या पीले स्वेटर पहन गली में खेलते बच्चे। नर्म धूप में कुर्सियों पर बैठी शॉल ओढ़े घरेलू महिलाएं, और घरों के

सामने क्यारियों में खिला स्निग्ध गेंदा फूल।

उस रेलवे क्वार्टर कॉलोनी में करीब 30-35 परिवार थे। उस बड़े कैंपस में स्कूल, खेल के मैदान, गलियों को आपस में जोड़ने वाली आड़ी-सीधी लकीर सी सड़कें थी। खेल के मैदान के कोने में लकड़ी के बड़े-बड़े लट्ठ रखे रहते थे, जिसके ऊपर अक्सर एक बूढ़ा बैठे धूप सेंका करता था। वह एक काली जैकेट और पतलून पहनता था। उसकी छोटी-छोटी आंखें हम सभी खेलते बच्चों को कौतूहल से देखती रहती थी। वह बीड़ी पीता था और मंद-मंद मुस्कुराता था। उसका नाम हममें से किसी को नहीं पता था। पर जहां तक याद है उसे सभी 'कल मिस्त्री' कहकर बुलाते थे। हमने उसे कभी किसी कल-पुर्जे को ठीक करते नहीं देखा। हमने उसे कभी किसी से बतियाते या किसी के साथ घूमते-फिरते भी नहीं देखा। वह मानों लट्ठ पर बैठे-बैठे धूप सेंकने के लिए ही अभिशप्त रहा हो।

उसका एक अनूठा अंदाज हम सभी बच्चों को बेहद दिलचस्प लगता था। वह अक्सर केले के पत्ते या अन्य किसी बड़े पत्ते को लपेटकर बीड़ीनुमा बना लेता था। फिर उसे दो दांतो के बीच दबाकर अपनी दोनों हथेलियों में छिपा लेता था, और फिर वह तरह-तरह की आवाजें निकालता था। सीटी की आवाज, बिल्ली की म्याऊं, बच्चे के रोने की आवाज और ना जाने कितनी तरह की आवाजें उसकी हथेलियों के खुलने और बंद होने के साथ निकलती थी।

तब मैं साइकिल चलाना सीख रही थी। अपने पिताजी की मदद से दो-चार पैडल लगा लेती थी बस। एक दिन चुपके से साइकिल को अकेले ही धकेलते हुए ले गई मैदान में। मैदान पूरा खाली था, वहाँ कोई नहीं था। लकड़ी के लट्ठ पर बैठने वाला 'कल मिस्त्री' भी नदारद था। साइकिल पर स्वयं सिद्धि का यह उपयुक्त अवसर था। मैं लट्ठ पर चढ़कर साइकिल की सीट पर बैठ गई और पैडल मारते ही साइकिल आगे बढ़ी। दोनों हाथों से हैंडल को भींचे मैं पैडल पर पैडल मारी जा रही थी।

मैं स्वयं साइकिल को नियंत्रित कर रही थी, यह सुखद अहसास मुझे लगातार गुदगुदा रहा था। मैं मैदान के चक्कर लगाने लगी। अनवरत।

धीरे-धीरे मेरी खुशी डर में बदलने लगी। मैं मैदान की परिधि पर चक्कर पर चक्कर तो लगा रही थी पर मुझे साइकिल को रोकना या साइकिल से उतरना कहाँ पता था।

योजना बनी कि मैदान के किनारे पड़े लकड़ी के लट्ठ के ऐन बगल में ब्रेक लगाकर लट्ठ पर पैर जमाया जाए। लेकिन कई बार लट्ठ के समीप से गुजरने के बाद भी योजना को क्रियान्वित करने की हिम्मत नहीं बनी। पृथ्वी की तरह मैं अपनी कक्षा में परिक्रमा करती जा रही थी। तभी देखा कि 'कल मिस्त्री' लकड़ी के लट्ठ पर बैठे बीड़ी फूंक रहा है। उससे मदद मांगने की इच्छा तो हुई पर साहस नहीं हुआ। दिल को मजबूत कर योजना के अनुसार लट्ठ के सामने ब्रेक लगा दी। चूँकि साइकिल की गति तेज थी, मेरे पैर लकड़ी के लट्ठ पर नहीं जमे। मैं औंधे मुंह साइकिल के साथ लट्ठ पर गिर पड़ी। मेरी पिंडलियाँ छिल गई। खून बहने लगा। शायद 'कल मिस्त्री' ने ही मुझे उठाया होगा। मुझे गिरा देख दो-चार लोग और दौड़े आए। किसी ने मेरा साइकिल उठाया। किसी ने मेरे कपड़ो से धूल झाड़े। कोई खबर देने मेरे घर की ओर दौड़ा।

'कल मिस्त्री' जाने किस भाषा में सभी को घटना का वर्णन कर रहा था।

शाम को मैं पैर पर पट्टी बांधे बरामदे के पास बेंत की बनी कुर्सी पर बैठी थी। पश्चिम आकाश में खड़े अनाम वृक्षों के पीछे सूरज छिपा जा रहा था। चिड़ियाँ 'घुप-घुप' करती हुई डैने फड़फड़ा रही थीं। मेरे अहाते की क्यारियों में कतारबद्ध खड़े गेंदा फूल शाम की उदासी में सिर झुकाए थे।

बाएं पैर की पिंडली पर वह कटा निशान अब अदृश्यप्रायः हो आया है।

सुस्मिता सरकार
वरिष्ठ लेखाकार

हिंदी दिवस-2021 के अवसर पर पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियाँ ।

हिंदी दिवस-2021 के अवसर पर राजभाषा शील्ड प्रदान करते हुए प्रधान महालेखाकार महोदया।

हिंदी दिवस-2021 के अवसर पर माननीय गृह मंत्री के संदेश का पाठ करते हुए उप महालेखाकार महोदय।